।। श्री गोभ्य: नम:।।

हिन्दी मासिक

कामधेनु-कल्याण

अप्रैल-2012

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन, पथमेड़ा

वर्ष: 6

Web. www. Pathmedagodarshan.org
Email: k.k.p.pathmeda@gmail.com

अंक :10

सुरभि उवाच

प्रिय पुत्रों !

भगवद् भक्ति, सात्विक शक्ति, तमोगुण से मुक्ति सदा मिलती रहे, क्या कहूँ, जन-जन तक मेरी महिमा व मेरे पंचगव्य पहुँचाने का प्रयास देखकर मन बहुत प्रसन्न होता है, क्योंकि मेरे पंचगव्य वह विशेष प्रसाद है, जिसमें स्वयं भगवान ने अपनी सात्विकता व आरोग्यता का भण्डार भरा है।

मेरे पंचगव्यों को अलग से किसी मन्दिर में अर्पण करने कि आवश्यकता नहीं है, वे स्वाभाविकरूप से ही भगवान का प्रसाद है।'प्रसाद''माने प्रसन्नता, मेरे पंचगव्य उसका उपयोग करने वाले हर प्राणी को प्रसन्नता देंगे, यह निश्चित फल है।ग्रीष्म ऋतु में एक थके-हारे व्यक्ति को जो प्रसन्नता मेरी छाछ, मेरे दही की लस्सी दे सकती है वैसी प्रसन्नता अन्य कोई पेय नहीं दे सकता।

भोजन में घृत, दही, दूध, छाछ के होने से भोजन की महिमा बढ़ जाती है व स्वाद बहुत आनन्द वर्धक हो जाता है।शीतकाल में गरम-गरम दूध जहाँ शीत निवारण करता है वहीं, मेरे घृत से बने लड्डू शीत को सहने की शक्ति प्रदान करते हैं साथ ही मानव शरीर को मजबूती प्रदान करते हैं।

मेरा गोमूत्र छिड़काव करने पर घरके सभी विषैले जीव समाप्त हो जाते हैं व प्रतिदिन इसका पान करने पर शरीर व मन दोनों को सुधार देता है। बस प्रतिदिन आयुर्वेद में वर्णित विधिनुसार मानव इसका सेवन करें।

मेरा गोमय जो पृथ्वी का प्रिय आहार है, यदि इस पृथ्वी को रोज अधिकाधिक गोबर-गोमूत्र खाद के रूप में मिले तो कभी भी यह पृथ्वी सुखी नहीं हो सकती, पतझड़ कभी नहीं हो सकता, यह धरती सदा हरियाली से भर जाएगी।मेरे पुत्रों इसको आप करके देखें।

मेरे, प्रिय पुत्रों तुम स्वयं मेरे पंचगव्य का उपयोग करो और सच में जिसका हित चाहते हो उसे भी पंचगव्य का उपयोग कराओ और पंचगव्य का प्रचार व गोग्रास सेवा इसे ही अपने जीवन की सेवा-साधना मानो, बाकि चिन्ता मत करना।

हे मेरे प्रिय बालकों !मैं तुम्हारी माँ सदा ही तुम्हारे साथ रहती हूँ और तुम्हारा सदैव ही ध्यान रखते हुए हित साधन करती हूँ।कभी भी, किसी भी परिस्थिति में स्वयं को अकेला समझकर अपने मन को भारी मत करना।हे मेरे प्रिय बालाकों !आपका हर बोझ लेने के लिये मैं तुम्हारी अपनी समर्थ माँ जो हूँ ना।हे मेरे प्रिय पुत्रों !तुम बिना विश्राम के इसी राह पर अनवरत आगे बढ़ते रहना, लक्ष्य की प्राप्ति सुनिश्चित होगी।

तुम्हारी माँ सुरभी

।। वन्दे धेनुमातरम्।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:6

dke/ku&dY;k.k

अंक:10

वि.सं. वैशाख शुक्ल पक्ष 2069 अप्रैल – 2012

अनुक्रमणिका

1. सम्पादकीय 2

2. साधक संजिवनी ❖ भगवान् के समग्ररूपसम्बन्धी मार्मिक बात–1 4

3 श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद ❖ परम भागवत गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज के प्रवचन (गोवत्सव पाठशाला– 2011) 5

4. गोभागवत कथा–2010 ❖ परम पूज्य द्वाराचार्य श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज 10

5. बालक अंक ❖ बालक के आहार–विकास का क्रम 15

6. महाराज शिवाजी की गौ निष्ठा 18

7. श्री कृष्ण और पुजारी का संवाद 20

8. दानमहिमा अंक ❖ दान–एक विहंगम दृष्टि 23

9. गोमूत्र एवं गोमय माहात्मय ❖ पं. गंगाधरजी पाठक 26

10. वीर बालिका तारा (काहनी) 27

11. गोसेवा अंक ❖ हमारी गोमाता 28

10. संस्था समाचार ❖ परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के मार्च माह के प्रवास का संक्षिप्त विवरणः– ❖ आगामी गोसेवार्थ कार्यक्रमों की संक्षिप्त सुचना 30

12. व्रत पर्वोत्सव अंक ❖ वैशाखमास – माहात्म्य 33

13. कविता 34

स्वर्गस्य सोपानपदेऽस्तिसंस्थिता हविः प्रदानैः सुरपौषिणीयम्।
मांगल्यमूर्तिः शुचिताविधात्री व्यासेन यस्याः भणिता प्रशस्तिः।।२२।।

इसकी सेवा से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। इसके द्वारा प्राप्त हव्यगव्यों से देवताओं की तृप्ति होती है। यह मांगलिक कार्यो में तथा पवित्रता में सहयोग देने वाली है। ऐसा महर्षि व्यास ने कहा है।

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज

Web. www.pathmedagodarshan.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

lEikndh; irk

श्रीगोधाम महातीर्थ आनन्दवन–पथमेड़ा, त.–सांचोर, जि.–जालोर (राज.) 343041

Ph.02979-287102-09

Tel. Fax. 02979-287122

प्रबन्ध व कार्यकारी सम्पादक

पूनम राजपुरोहित ''मानवताधर्मी''

Mob.9414154706

lEiknd

स्वामी ज्ञानानन्द

eY;&10 #i;s

आजीवन सदस्यता शुल्क–1100 रुपये मात्र

भगवान् के समग्ररूप-सम्बन्धी मार्मिक बात

साभारः- साधक संजीवनी

प्रकृति और प्रकृतिके कार्य- क्रिया, पदार्थ आदिके साथ अपना सम्बन्ध माननेसे ही सभी विकार पैदा होते हैं और उन क्रिया, पदार्थ आदिकी प्रकटरूपसे सत्ता दीखने लग जाती है। परन्तु प्रकृति और प्रकृतिके कार्यसे सर्वथा सम्बन्ध-विच्छेद करके भगवतस्वरूपमें स्थित होनेसे उनकी स्वतन्त्र सत्ता उस भगवत्तत्त्वमें ही लीन हो जाती है। फिर उनकी कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं दीखती।

जैसे, किसी व्यक्तिके विषयमें हमारी जो अच्छे और बुरेकी मान्यता है, वह मान्यता हमारी ही की हुई है। तत्त्व से तो भगवान के सिवाय दूसरी कोई सत्ता ही नहीं है। ऐसे ही संसारमें 'यह ठीक है, यह बेठीक है' इस प्रकार ठीक-बेठीककी मान्यता हमारी ही की हुई है। तत्त्वसे तो सब भगवान्का स्वरूप है। हाँ, संसारमें जो वर्ण-आश्रमकी, यह जो विधि-निषेधकी मर्यादा है, इसको महापुरुषोंने जीवोंके कल्याणार्थ व्यवहारके लिये मान्यता दी है।

जब वास्तविक भगवत्तत्त्वका बोध हो जाता है, तब भौतिक सृष्टिकी सत्ता नहीं रहती। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि संसारकी स्वतन्त्र सत्ता न रहनेपर संसार मिट जाता है, उसका अभाव हो जाता है, प्रत्युत अन्तःकरणमें सत्यत्वेन जो संसारकी सत्ता और महत्ता बैठी हुई थी, जो कि जीवके कल्याणमें बाधक थी, वह नहीं रहती। जैसे सोनेके गहनोंकी अनेक तरहकी आकृति और अलग-अलग उपयोग होनेपर भी उन सबमें एक ही सोना है, ऐसे ही भगवद्भक्तके द्वारा अनेक तरहका यथायोग्य सांसारिक व्यवहार होनेपर भी उन सबमें एक ही भगवत्तत्त्व है- ऐसी अटलबुद्धि रहती है। इस तत्त्वको समझनेके लिये ही गीता में जगह-जगह समग्ररूपका वर्णन हुआ।

उपासना की दृष्टिसे भगवान्के प्रायः दो रूपोंका विशेष वर्णन आता है- एक सगुण और एक निर्गुण। इनमें सगुणके दो भेद होते हैं- एक सगुण-साकार और एक सगुण-निराकार। परन्तु निर्गुण के दो भेद नहीं होते, निर्गुण निराकार ही होता है। हाँ, निराकारके दो भेद होते हैं- एक सगुण-निराकार और एक निर्गुण-निराकार।

उपासना करनेवाले दो रुचिके होते हैं- एक सगुण विषयक रुचिवाला होता है और एक निर्गुण-विषयक रुचिवाला होता है। परन्तु इन दोनोंकी उपासना भगवान्के 'सगुण-निराकार' रूपसे ही शुरू होती है; जैसे- परमात्म प्राप्तिके लिये कोई भी साधक चलता है तो वह पहले 'परमात्मा है' - इस प्रकार परमात्माकी सत्ताको मानता है और 'वे परमात्मा सबसे श्रेष्ठ हैं, सबसे दयालु हैं, उनसे बढ़कर कोई है नहीं- ऐसे भाव उसके भीतर रहते हैं, तो उपासना सगुण-निराकारसे ही शुरू हुई। इसका कारण यह है कि बुद्धि प्रकृतिका कार्य होनेसे निर्गुणको पकड़ नहीं सकती। इसलिये निर्गुणके उपासकका लक्ष्य तो निर्गुण-निराकार होता है, पर बुद्धिसे वह सगुण-निराकार का ही चिन्तन करता है।

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(टेपांकित वाणी का संकलन)

(गोऋषि परम श्रद्धेय स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

.....पिछले अंक से आगे

आप देखेंगे की एक आदमी ने कीचड़ में से गाय को बचाया था। उस आदमी को स्वतन्त्रता के समय फाँसी पर लटका दिया। फाँसी पर लटकाने के लिये जैसे ही फाँसी की रस्सी ढ़ीली करे वैसे ही वो गाय उसके पाँवों के नीचे सींग लगा दे। उस गोभक्त को तो वा गोमाता दिख रही है पर और किसी को दिखे नहीं। ऐसी कई सत्य घटनाएँ हुई जिनको आप गीताप्रेस से प्रकाशित 'गोसेवा के चमत्कार' नामक पुस्तक से पढ़ सकते हैं।

गोसेवा करने वाले को गाय कैसे भारी-भारी संकटों से बचाती है, इस सम्बन्ध में कई सारी घटनाएँ हैं। ऐसी कितनी ही घटनाएँ हैं उस पुस्तक में। संख्या मुझे याद नहीं है पर सम्भवतया १५-२० के आस-पास घटनाओं का संकलन है। दिख तो हमें स्थूल रूप से रही है पर ईश्वर की भाँति सूक्ष्म रूप से गाय है। 'गाय तो विराट है' तो सब जगह आपके मकान में, हवाई जहाज में, ट्रेन में, लिफ्ट में, कार में सब जगह वो आपके साथ रह सकती है। वो हर जगह आपकी रक्षा कर सकती है, पर हाँ उसकी सत्ता को हम स्वीकार करें तब। उसकी सत्ता और महत्ता स्वीकार करने से उसकी कृपा का अनुभव होता है अन्यथा नहीं होता और सत्ता-महत्ता को स्वीकार करते ही उनके शरणागत हो जाते हैं। शरण लेने योग्य जितनी भी जगह है उन सब में सर्वोत्तम स्थान गोमाता में ही है। इसलिये भगवान भी गोशरण रहते हैं। भगवान को भी धर्म स्थापना का काम करना हो, अधर्म का शमन करना हो, तो गाय की शरण ग्रहण करते हैं। वे गाय का आश्रय ग्रहण करते हैं। यह बड़ी महत्वपूर्ण बात है। इससे भगवान का अपमान नहीं होता है। भगवत् भक्त सोचेगा की भगवान गाय से छोटे हो गये। गाय और भगवान दो हैं ही नहीं। भगवान माँ को अपने से अधिक ऊँचा स्थान देते हैं। माँ के रूप में भगवान का स्वरूप उससे भी श्रेष्ठ है। पिता के शरीर से माँ का शरीर श्रेष्ठ है। गो माँ है। माँ के स्वरूप में भगवान हैं। कृष्ण मेरी माँ है। यह प्रत्यक्ष भी है और अप्रत्यक्ष भी है। यह स्थूल आहार भी प्रदान करती है और भावना से सूक्ष्म आहार भी। अगर आपका भाव उनसे जुड़ जाये तो हमें शुद्ध भाव निरन्तर गाय प्रदान करती रहती है।

हम इन्हीं शब्दों के साथ अपनी वाणी को विराम देते हैं, वैसे हमें पता नहीं क्यों ऐसा लग रहा है कि हम थोड़ा ठीक ढ़ंग से नहीं कह पाये। फिर भी जो कुछ कहा है उनमें कोई ऐसा विषय हो जिसको आप किसी कारण से, जैसे कि- भाषा के कारण, क्योंकि हमें मात्राओं का उच्चारण नहीं आता। कौन सा शब्द कितनी मात्रा से बोलना आदि। किसी कारण से आपको बात समझ में न आयी हो या और किसी भी तरह का भाव हो तो आप अभी पूछ सकते हैं। आप सभी को सादर हरिस्मरण ! जय गोमाता जय गोपाल।

एक गोवत्स का प्रश्न- महाराजजी ''तक्र शक्रस्य दुर्लभम्'' कहाँ से लिया गया है?

स्वामीजी महराज- छाछ इन्द्र को भी दुर्लभ है। यह वास्तव में नीतिशास्त्र का सूत्र

है। जो सुक्तियाँ होती हैं ना 'शुभाषितम्' उनमें से कहीं प्राप्त हो सकता है और विशेषकर के गोअंक-गोसेवा अंक है उसमें मिल जायेगा। कहाँ लिखा हुआ है और किसमें से लिया गया है मुझे याद नहीं पर उसमें मिल जायेगा। कौनसे ग्रन्थमें है और किसके द्वारा रचित है, पर गोअंक व गोसेवा अंक में प्राप्त हो जायेगा।

गोवत्स का प्रश्न- प्रणाम महाराजजी ! महाराजजी, जो जर्सी के बैल होते हैं, जो बछड़े होते हैं वो बैल के रूप में तो काम आते नहीं है और गोशाला है मेरे गांव की उसमें वो बहुत ज्यादा हो गये हैं। उनको किस रूप में लिया जाये? क्योंकि वो देशी गाय में तो आते नहीं।

स्वामीजी महाराज- वैसे वो गाय है ही नहीं उनको पशु के रूप में लेना चाहिए। हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता और हमारे संस्कार हमें यह प्रेरणा देते हैं कि जो प्राणी पृथ्वी पर जन्म लेता है उनको जीने का अधिकार है। दूसरों को, किसी को भी क्षति पहुँचाए बिना अगर कोई जीये और उसे शासन भी दण्डित करता है तो शासन को भी अपराध लगता है। तो ये जो बछड़े हैं जो कृषि के काम के नहीं हैं, हमारे यहाँ भी बहुत सारी संख्या में हो रहे हैं। जहाँ पर इस तरह के पशु पैदा हुए वहाँ के लोग तो उनको मार कर अपना काम कर लेते हैं, पर हम तो ऐसा कर नहीं सकते। जो हम गोशाला एवं गोसेवा का कार्य कर रहे हैं उनके वहाँ इस तरह के पशु गाय के नाम से आ जाते हैं। पहली बात तो उनको गोशाला मे नहीं लेना चाहिए उनके लिए अगर सेवा की बात सामने आये तो जीवदया होते हैं जीव दया वाले भाव को लेकर पशुशाला में लेना चाहिए। दूसरी बात इनका बधिया करण करा देना चाहिए। तीसरी बात इनका उपयोग केवल यही हो सकता है कि ये जो मल त्यागेंगे वो जैविक होगा, सात्विक तो नहीं होगा पर जैविक होगा। फर्टिलाईजर से अच्छा होगा, इसे खेत में डाला जाये। इससे अच्छा उपयोग और कुछ भी नहीं है।

गोवत्स का प्रश्न- जय गोमाता जय गोपाल ! महाराजजी कल आपने संस्कार के बारे में बताया। महाराजजी आजकल के अभिभावक बच्चों के एडमिशन इंगलिश मिडियम के विद्यालयों में ज्यादा करवाते हैं। ज्यादातर ऐसे स्कूल इसाई लोगों के होते हैं। तो उनको क्रिसमिस की छुट्टी और जो भी उन लोगों के त्यौहार होते हैं वे उनकी ही छुट्टियाँ रखते हैं। उनको वो ही सीखाते हैं जो उनके संस्कृति में होता है। हिंदी, मराठी भारतीय भाषाएँ, यहाँ के त्यौहारों के बारे में तो बालकों सीखाते ही नहीं और सिर्फ अंग्रेजी ही सीखाते हैं।

स्वामीजी महाराज- पहली बात तो यह है कि अगर इस तरह की दुर्भावना से ग्रसित लोग शिक्षा के केन्द्र खोलते हैं तो उनका हम कोई विकल्प तैयार करें। अंग्रेजी को पढ़ना तो पड़ेगा। जैसे किसी समय दुनिया के सभी उच्च स्तर के लोगों से संवाद करने के लिए संस्कृत भाषा थी। ऐसे ही वर्तमान असुरों ने अंग्रेजी को अपनी भाषा बनाई है। तो जिससे लड़ना हो तो उसके पास जैसा शस्त्र हो, जैसा वाहन हो उससे श्रेष्ठ वाहन शस्त्र हमें चाहिए। तो अंग्रेजी तो हमको हमारे बच्चों को पढ़ना तो पड़ेगा भाषायी दृष्टि से, पर उनके कुसंस्कार अंग्रेजी के जनक या अंग्रेजी को बनाने वाले लोगों के कुसंस्कार हमारे अन्दर न आने पायें। इसके लिए पहला विकल्प तो यह है कि हम लोग हमारी स्कूलों में ही अंग्रेजी पढ़ाएँ। अब हमारे भी बहुत सारे लोग अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खोलने लग गये हैं। तो ऐसी स्कूलों को

किसी तरह से वैसे वे भी व्यवसाय करते हैं तो आपमें से भी कुछ बन्धु ऐसी अंग्रेजी माध्यम की स्कूलों व्यावसायिक दृष्टि से ही सही पर एक पवित्र लक्ष्य से कि हमारे समाज को एक बहुत अच्छा संस्कार मिलेगा, यहाँ से उच्च स्थानों पर जायेंगे वो लोग अच्छे संस्कारवान रहेंगे इसलिए हमें ऐसी स्कूलें खोलनी चाहिए इस भाव के साथ कुछ इस दिशा में कार्य करें तो बहुत अच्छी बात है। बाकि कोई उपाय ही नहीं है। उनके वहाँ भेजोगे तो वही करेंगे।

आबू में हमको बताया था किसी ने कि वहाँ पर कई तरह की मूर्तियों बनाते हैं और स्कूल से बच्चों को ले जाते हैं ईसाई मिशनरी के लोग नक्की तलाब पर। वहाँ ले जाकर उसमें भगवान कृष्ण की भी मूर्ति होती है, शिवजी की भी होती है और ईसा की भी होती ऐसे मूर्तियाँ बनाते हैं। ईसा की या उनके जो संतों की मूर्तियाँ बनाते हैं वो तो बनाते हैं लकड़ी की और ये मिट्टी या पत्थर की बनाते हैं हमारे उपास्य देवताओं की। उन पर वो कलर प्रिंट कर लेते हैं और बच्चों को हाथ में नहीं पकड़ाते फिर कहते हैं कि देखो सच्चा होगा वो पानी पर तिर जायेगा। लकड़ी होती वह तो पानी पर तिर जाती है। पत्थर और मिट्टी से बनी मूर्तियाँ होती है वे डूब जाती हैं। वो लोग कहते हैं कि तुम्हारा भगवान झूठा है और हमारा भगवान सच्चा है। ये छोटे-छोटे बच्चों को ऐसा सिखाते हैं।

बस में चलते-चलते बैटरी के नीचे से तार खोल देते हैं फिर चाबी को घुमाते हैं और कहते हैं बस खराब हो गई। सब याद करो अपने-अपने देवताओं को। अब कोई भगवती को याद करे, कोई कन्हैया को याद करे, कोई हनुमानजी को याद करे, सबको याद कर लिया पर गाड़ी स्टार्ट नहीं हुई। अब बोले ईसा को याद करो। बच्चे जब तक ईसा को याद करने लगते हैं तब तक बैटरी का तार जोड़कर गाड़ी को स्टार्ट कर देते हैं। इस तरह के भ्रमित करने के छड़यंत्र सुने हैं हमने।

हम तो स्कूल में पढ़ने गये नहीं। यह तो आसुरी माया है। आसुरी माया जाल से बचने के लिए यह हमें अंग्रेजी शिक्षा, अंग्रेजी भाषा भी हमें सीखनी है और साथ-साथ में उनकी माया से बचना है। अब हम ऐसी स्थिति में आ गये हैं कि हम लोग भी अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खोल सकते हैं। जैसे वो खोलते हैं वैसे हम भी खोल सकते हैं और कई सारे लोगों ने खोले हैं। अब यह उसमें अलग बात है कि इनमें अधिक खर्चा करना पड़ता हैं क्योंकि ऐसी संस्थाएँ में पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले अधिक सविधाएँ चाहते हैं। तो उनको बहुत बड़ा बजट चाहिए। तो जिस तरह का बजट हो ऐसा विकल्प खोजना चाहिए जय गोमाता जय गोपाल।

गोवत्स का प्रश्न :-प्रणाम के साथ, महाराजजी गोमाता की महिमा और महत्ता तो बहुत सारे शास्त्रों में लिखी हुई है और हम उसे समझ भी सकते हैं, पर इसको लोगों तक कैसे पहुँचा जावे?

स्वामीजी महाराज- इसके लिए जैसा पहले कहा कि गाय के अलावा अन्य पशुओं का दूध राजसी और तामसी होता है और उस दूध के सेवन से मनोकायिक रोग उत्पन्न होते हैं। बहुत सारे रोग हो गये हैं जो लोगों के पहले मन में और फिर तन में आते हैं। जर्सी के दूध का नाम ए वन जिससे बिमारियाँ होती है और उसपर एक शोध ग्रन्थ तैयार होकर आ गया है। जल्दी ही आपको दूध की सारी जानकारी मिलेगी, पर हमारा तो आग्रह यही है कि जर्सी के दूध से भैंस का दूध बढ़िया है

कम से कम एक जाति है। उसमें कफ और वात की वृद्धि होगी। जर्सी का दूध तो बिल्कुल ही नहीं पीना चाहिए। जय गोमाता जय गोपाल।

गोवत्स का प्रश्न प्रणाम के साथ- स्वामीजी, घर पर हम गाय का दूध लेते हैं पर यह कैसे पता पड़े कि जो आदमी हमें दूध दे रहा है वो हमें गाय का दूध दे रहा है और सही दे रहा है? इस सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण बातें हो तो हमें बताने की अति कृपा करावें जिससे हम पहचान सकें कि हम सही दूध ले रहे है?

स्वामीजी महाराज- अभी तक दूध जाँचने के जो यंत्र हैं उनसे ८० प्रतिशत तक पता लग जाता है कि दूध गाय का है या अन्य पशु का। ऐसे यंत्र तो आपको मिल सकते हैं। सम्भवतयाः आप गोरस भण्डार में जाओंगे तो वहाँ आपको इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी देंगे और दूसरी बात है वो यह है कि हमें दूध केवल विश्वसनीय लोगों से ही लेना चाहिए। क्योंकि दूध तो आहार है, जिसका प्रभाव हमारे अंतकरण पर पड़ता है। अन्न है वो स्थूल है पर दूध का प्रभाव तो बहुत ही जल्दी मन और बुद्धि पर पड़ता है। इसलिए पूर्ण विश्वसनीय व्यक्ति हो उसी से दूध लेना चाहिए।

गोवत्स का प्रश्न प्रणाम के साथ- महाराजजी मेरे काफी मित्र जैन हैं। हम लोगों के बीचमें चर्चा होती रहती है जिसमें वो यह कहते हैं कि सोचते तो हम भी हैं कि गोसेवा करनी चाहिए मगर तुम्हारे धर्म में तो तुम्हारे भगवान गाय के आगे पीछे घूमते हैं तो तुम तो गाय की सेवा कर सकते हो पर हमारे धर्म में लिखा है कि सभी जीवों पर दया करनी चाहिए। गाय के लिए तो बहुत कुछ और भी लोग हैं जो सेवा करते हैं पर बाकि और भी जीव हैं उनकी सेवा कोई भी नहीं कर रहा है तो दूसरे जीवों की सेवा करनी चाहिए। महाराजजी इस पर थोड़ा प्रकाश करावें।

स्वामीजी महाराज - वास्तव में मुख्य बात यह नहीं है कि गाय एक प्राणी है और उस पर दया कर उसे बचाना चाहिये। वास्तविक बात तो यह है कि गाय के सान्निध्य में रहने से ही मानव में दया भाव का जन्म होता है। गाय दया की जनक है और जब मनुष्य गो के सन्निधि में रहेगा तो निश्चित ही मनुष्य में दया उत्पन्न होगी, अपने आप वह किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करेगा। गाय की उपस्थिति, गाय की सुरक्षा सुनिश्चित होने पर सभी प्राणियों की सुरक्षा सुनिश्चित हो जाती है। जहाँ गाय रहती है, जिसे हम गोचर करते हैं। उस गोचर में सृष्टि के जितने भी पशु-पक्षी, जीव-जन्तु छोटे-छोटे वे सब वहाँ निवास करते हैं और निर्वाह भी करते हैं।

जब हम गाय की बात करते हैं तो सम्पूर्ण सृष्टि की बात करते हैं। उनको आप यह बतायें कि गाय का अर्थ आप समझे नहीं इसलिए आप यह बात कहते हो। वास्तव में गाय का अर्थ है सम्पूर्ण सृष्टि। उनको यह भी कहा जा सकता है कि गाँधीजी तो जैन दर्शन को ही मानते थे, आप गाँधीजी को पढ़ लें। गाँधीजी ने गाय को क्या कहा? गाँधीजी ने गाय को सम्पूर्ण मूक सृष्टि का प्रतिनिधि कहा और सरताज भी कहा है। गाय को बचाने का अर्थ है सम्पूर्ण प्रकृति को बचाना। तुम तो केवल जीवों की बात करते हो, हम तो पहाड़ की भी बात करते हैं। हमारे भगवान ने तो पहाड़ को भी पूजा, निर्जीव को भी। हमारी दया केवल जीवों तक सिमित नहीं है। तो आप उनको कहें कि आपकी बात तो ठीक है पर इसके भी आगे जो है उसकी आपको अनुभूति नहीं होती। क्यों नहीं होती? इतनी

निर्मल बुद्धि आपकी नहीं हुई। क्यों नहीं हुई? क्योंकि आप गाय के निकट नहीं गये।

गोवत्स का प्रश्न प्रणाम के साथ- महाराजजी जहाँ गाय का दूध उपलब्ध नहीं हो तो वहाँ हम क्या करें?

स्वामीजी महाराज- बढ़िया तो यह है कि जहाँ गाय का दूध, दही, छाछ व घी न मिले वहाँ बिना दूध, दही, छाछ व घी के ही भोजन करना चाहिए। सबसे बढ़िया तो यह है। (पर आपकी गो निष्ठा में, गोगव्यों के प्रति निष्ठा में अंतर नहीं पड़ना चाहिये। अगर आपकी गोगव्यों के प्रति निष्ठा पक्की होगी तो गोगव्य आपको सर्व सुलभ होंगे, इसमें कोई संदेह नहीं करना चाहिये)

गोवत्स का प्रश्न प्रणाम करते हुए- स्वामीजी हम अपने को गोभक्त समझते हुए भी गोसेवा करना, गोशाला खोलना, गोचिकित्सा करना, ये सब नहीं कर पा रहे हैं। इसका क्या कारण है? अगर ऐसा है तो भगवान से क्या प्रार्थना करनी चाहिए?

स्वामीजी महाराज -पहली तो बात यह है कि गोसेवा का भाव आना, गो को सुख पहुँचे ऐसे भावों का आना ही अपने आप में गोसेवा है। ऐसे भावों के आने से यह अपने आप में ही गोसेवा प्रारम्भ हो गयी है। इसलिए ऐसे गोभक्त कभी निराश न हो, मानो प्रत्यक्ष में किसी कारणवश सेवा नहीं कर पा रहा हो वो यह ना माने कि मैं सेवक नहीं बना। भाव आना ही अपने आप में सेवा है। क्रियात्मिक रूप से तो सेवा सीमित होती है। एक क्षेत्र में एक व्यक्ति अमूक संख्या तक ही सेवा कर पाता है। भावात्मक सेवा असीम होती है। हमारा भाव निरन्तर यह बना रहे कि हमारी गोमाता सुखी रहे, उनका अपमान न हो उनका तिरस्कार न हो, कभी वो भूखी और प्यासी न रहे, उनकी प्रताड़ना न हो, उन्हें अखाद्य पदार्थ न मिले, हत्या वाली जब बात आये तो तब तो हमें अपने आपको अर्पित करने को तैयार हो जाना चाहिये कि हमें ऐसा अवसर मिले कि हम अपने आप को दे दें पर गाय को बचाएँ और अवसर मिलेगा तो बिल्कुल तैयार रहेंगे। यह भाव एक दिन आपको ऐसी स्थिति में ले जायेगा जहाँ कि आप गोसेवा करने में समर्थ हो जायेंगे। अपने ऐसे भावों को और बढ़ाएँ। गोमाता सदा आप पर कृपा बनाये रखें।

गोवत्स का प्रश्न प्रणाम करते हुए- स्वामीजी हमारा राष्ट्र बड़ा गौरवशाली रहा है। पीछे के कुछ वर्षों से षडयंत्रकारियों ने हमारी शिक्षा, संस्कार और संस्कृति को नष्ट कर दिया। गोपालकों व भारतीयों को गाय से दूर कर दिया है तो अब इस सम्बन्ध में युवाओं का क्या योगदान हो सकता है?

स्वामीजी महाराज- सब कुछ युवा ही कर सकता है और युवा ही भविष्य है, क्योंकि यह वर्तमान है और इसी से भविष्य बनता है। वर्तमान में युवाओं को अभी हम जैसी चर्चाएँ कर रहे हैं वो ही उनको करना है। गाय की महिमा को और गव्यों की विशेषताओं को जन-जन तक पहुँचाना है और गव्यों को भी जन-जन तक पहुँचाना है। केवल महिमा व विशेषताओं की बातें ही नहीं पहुँचानी है, बल्कि स्वयं को गव्यों का पान करके, उसकी अनुभूति को जन-जन तक पहुँचाना है। वस्तुएं भी और अपना जीवन भी। हम जो गोसेवा के कार्य में लगे हुए हैं, उनको स्वयं को भी देखें और फिर उन वस्तुओं को भी देखें। यह एक महान क्रांति है, जो आवेशात्मक क्रांति होती है ना उसके अनुसार यह क्रांति दिखेगी नहीं क्योंकि यह एक रचनात्मक..शेष पृष्ठ २२ पर

श्री गोभागवत कथा

कथा व्यास

परम पूज्य द्वाराचार्य महंत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज

पिछले अंक से आगे....

अब आगे के श्लोक में श्रीध्रुवजी महाराज बड़ा सुन्दर भाव कह रहे हैं। **''नूनं विमुष्टमतयस्तव मायया ते ये त्वां भवाप्ययविमोक्षणमन्यहेतोः। अर्चन्ति कल्पकतरुं कुणपोपभेग्यमिच्छन्ति यत्स्पर्शजं निरयेऽपि नृणाम्।।''** ध्रुवजी महाराज कह रहे हैं कि यह भगवन् 'बहुत प्यारे श्लोक बहुत ध्यान से सुनें इसी का नाम तो भागवत है। भागवतों के हृदय के भावों को ही भागवत कहा जाता है और वे भाव भागवत की स्तुतियों में प्रकट होते हैं।' **'नूनं विमुष्टमतयस्तव मायया ते'** हे भगवन ! निश्चित ही उनकी बुद्धि को आपकी माया ने मोहित कर रखा है। उनकी बुद्धि को आपकी माया ने मोहित कर रखा है। किन जीवों की? बोले जो लोग आपकी उपासना तो करते हैं किन्तु आपकी उपासना, आपके चरण-कमलों के दिव्य प्रेम की प्राप्ति के लिए नहीं ! अपितु 'अन्य हेतु से' माने लौकिक-परलौकिक भोगों की प्राप्ति के लिये जो आपकी उपासना करते हैं उनकी बुद्धि को आपकी माया ने ठग लिया है।

भगवान की उपासना का फल इस लोक में भोगों की प्राप्ति अथवा परलोक में स्वर्गादि लोकों में भोगों की प्राप्ति हो यह भगवान की उपासना का फल नहीं है। भगवान की उपासना का फल तो यह है कि भगवत् चरणार्विन्दों में आगाद् प्रीति हो। यह उपासना का फल है। सीताराम चरण प्रीति मोरे, अनु दिन बड्डु अनुग्रह तोरे। यह वस्तुतः उपासना का फल है और ऐसी उपासना जो इस जन्म मृत्यु के दुःख चक्र से जीव को छुड़ाने वाली है ऐसी उपासनाओं को करके जन्म मृत्यु के चक्र में डालने वाले लौकिक- परलौकिक भोगों को ही जो मांग लेते हैं उनकी बुद्धि को तो निश्चित ही आपकी माया ने ठग लिया है। 'महाराजजी उदाहरण बहुत अद्भुत दिया। कैसे? कहते हैं जैसे कोई मनुष्य बहुत दुःखी हो, बड़ा विपन हो, अत्यन्त दरिद्रता के दरिद्र से दुखित है। भूखा, नंगा, कंगाल, हाय-हाय मैं क्या करू मेरे कुछ भी नहीं मैं कहा जाऊँ, कैसे जीऊँ और ऐसो कोई सर्वथा निरधन, अभावग्रस्त, कंगाल मनुष्य सौभाग्य से किसी कल्पवृक्ष के नीचे पहुँच जाये। वहाँ दहाड़ मार-मार कर रोने लग जाये। हाय-हाय मैं क्या करू?, कहाँ जाऊँ? तो कल्पवृक्ष क्या कहेगा? अरे भाई ! अब रोना गाना बंद करो। जानते हो किस की छाया में बैठे हो? तुम कल्पवृक्ष की छाया में बैठे हो। मैं तुझे स्वर्ग की सम्पत्ति भी देने में समर्थ हूँ, तुम स्वर्ग का भी वैभव मांगो तो वह भी हम तुम्हारे सामने उपस्थिति कर सकते हैं। अब रोना-गाना बंद करो। हृदय खोलकर संकोच त्याग कर मांग लो। क्या चाहते हो? मांग लो। तो वह व्यक्ति कहता है कि बहुत अच्छा हुआ। आप हमें मिले, आपकी छाया हमें मिली। आप ज्यादा ही प्रसन्न हैं तो हमें बड़ी भूख लगी है तो एक छटांक चना दे दीजिये। आप लोग सब पढ़े लिखे बुद्धिमान लड़के हैं। कल्पवृक्ष के नीचे सौभाग्य से कोई पहुँच जाये और एक छटांक चना मांग ले तो उसे बुद्धिमान कहा जायेगा कि मूर्ख। अरे मूर्ख नहीं महामूर्ख राजाधिराज।'

इसी प्रकार से इन तुच्छ असार, घृणित नाशवान भोगों की प्राप्ति कर लेना यह आपकी उपासना का फल नहीं। क्या बोले- यह भोग तो नारकीय योनियों में भी प्राप्त होते हैं।

नारकीय योनि कौन-कौनसी हैं? सूअर, कुत्ते आदि ये सब नारकीय योनियाँ हैं। इन योनियों में भी ये भोग तो प्राप्त होते ही हैं। कहेंगे कि नहीं जी यह बात बिल्कुल ठीक नहीं है? इन योनियों में भोगों की प्राप्ति हो सकती है। अरे कुत्ते के भोग और मनुष्य के भोग एक कैसे हो जायेंगे। जैसे देवताओं के दिव्य भोग और मनुष्यों के भोग एक नहीं हो सकते तो कुत्ते और मनुष्य के भोग एक कैसे हो सकते हैं। तो आप यह कैसे कह सकते हैं कि लौकिक-पारलौकिक भोग सब एक जैसे हैं। खीर पीने में जितना स्वाद हमको आता है उससे कम स्वाद सुअर को अपने भोज्य पदार्थ विष्ठा को ग्रहण करने में नहीं आता है। उतना ही स्वाद उसको भी आता है। देवता भले ही कहें कि हम स्वर्गके देवता भोगों को भोग रहे हैं। मनुष्य लोक के भोग तो तुच्छ हैं। मनुष्य को अपने भोग भोगने में जितना स्वाद आता है उतना ही स्वाद देवताओं को अपने स्वर्ग के भोग भोगने में आता है।

जब सुअर-कुत्ते और मनुष्य व देवता इनके भोगों की अनुभूति में भेद नहीं है तो फिर भोगों में भेद कैसे कहा जाये। कहते हैं कि कालीदास काशी गये तो वहाँ देखा एक लड़की माला बुन्द रही थी। तो उसको पूछा कि यह क्या कर रही हो? एक ही धागे में सोना और कांच की गोलियें, इन सबको एक धागे में पो रही हो। कहाँ कांच और कहाँ मणि, कहाँ सोना। यह कोई मेल है क्या? तो उसने कहा 'विचारवान पाणिनेक सूत्रे' विचारवान महर्षि पाणिनी ने एक सूत्र में **'स्वानम् युगानम् मघवान् सेव मघोना मत्तधते।'** यह सूत्र है पाणिनी का। उन्होंने भी इन तीनों शब्दों का एक साथ प्रयोग किया। मानो तीनों का प्रयोग इसलिये महर्षि पाणिनी ने किया कि युवा व्यक्ति के भोगों में, देवताओं के भोगों में और कुत्तों के भोगोंमें भेद नहीं है। तो जो भोग कुत्ते की योनि में प्राप्त हो जाता है वो ही भोग हम भगवान की भक्ति करके चाहें तो यह हमारी बुद्धिमानी नहीं है। यह ध्रुवजी की स्तुति। स्तुति तो अभी काफी अवशिष्ठ है पर आज यहीं कथा को विराम देते हैं। कृष्ण गोविन्द-गोविन्द गोपाल नन्दलाल, कृष्ण गोविन्द-गोविन्द गोपाल नन्दलाल-२।

तीसरे दिन की कथा

ऊँ नमः परमहंसास्वादित चरणकमल चिन्मकरन्दायः
भक्तजनमानस निवासाय श्रीरामचन्द्राय।।
वागीशा यस्य वदनेलक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि।
यस्यास्ते हृदये सम्वित् तं नृसिंह महं भजे।।
विश्वसर्वविसर्गादिनवलक्षणलक्षितम्।
श्रीकृष्णाख्यं परं धाम जगद् धामनमामि तत्।।
ऊँ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एवं च।
नमो ब्रह्मासुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।।
प्रहलाद नारदपरासर पुण्डरीक व्यासाम्बरीष शुकशौनक भीष्मदाल्भ्यान्।
रूक्माकंदार्जून वशिष्ठविभीषणार्दान् पुण्यानिमान्परम भागवातान्नमामि।
वांच्छाकल्पतरूभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एवं च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्ण वेभ्यो नमो नमः।।
नारायणं नमस्कृत्य नरंचैव नरोत्तमम्।
देवी सरस्वती व्यासं ततो जय मुदीरयेत।।
भक्तभक्तिभगवन्त गुरु चतुर नाम वपु एक।
उनके पद वन्दन किये नाशे विघ्न अनेक।।

कृष्ण गोविन्द-गोविन्द गोपाल नन्दलाल, कृष्ण गोविन्द-गोविन्द गोपाल नन्दलाल-२। अखिल गोवंश की जय, श्रीमद्भागवत महापुराण की जय, श्रीगीता जयन्ति की जय, सब सन्तन की जय, जय जय श्रीराधे..।

हरिशरणम्, अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक सर्वेश्वर, परब्रह्म, असंख्य दिव्यान्त कल्याण

परमानन्दकन्द सिन्धु, भक्त वाच्छा कल्पतरू, भक्तवत्सल, शरणागतवत्सल, गोब्राह्मण प्रतिपालक, गोविन्द प्रभु की महति कृपा करूणा से गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा में इस पवित्र महागोष्ठ के मध्य श्रीकामधेनु कल्याण महामहोत्सव के उपलक्ष में परम गोभक्त पूज्यश्री महाराजजी की सन्निधि में एवं हमारे श्रीधाम वृन्दावन से पधारे हुए अन्नय रसिक श्रीस्वामी हरिदासजी के परम्परा के पूज्य आचार्य चरण श्रीगोरिलालकुंज वाले महाराजजी के पावन सन्निधि में, परम पूज्य संतों, विद्वान सज्जनों की पावन उपस्थिति में हम आप सबको श्रीमद्भागवत के माध्यम से की जा रही गोचर्चा के माध्यम से, गोमहिमा के माध्यम से कालेक्षप करने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

आज पूज्यश्री महाराजजी ने बड़ी सुन्दर बात कही। एक सूत्र में ही सब कुछ कह दिया। एक तो यह कहा कि गाय के प्रति जिसकी भक्ति नहीं, श्रद्धा नहीं है, निष्ठा नहीं है, वह कभी भी गोविन्द का भक्त नहीं हो सकता। जो सच्चे अर्थ में गोविन्द का भक्त होगा वह गोभक्त अवश्य होगा। क्योंकि गोविन्द तो ईष्ट है और गाय अतिईष्ट है। ईष्ट की ईष्ट है ना गाय, इसलिये। ईष्ट श्रीगोविन्द और गोविन्द की भी ईष्ट श्रीगोमाता है। भगवान अनुचर है गाय के। भगवान भी गाय के आगे नहीं चलते पीछे-पीछे चलते हैं। आपद् मस्तक पर्यन्त अलंकृत हो उठता है, वन माला भी गोरजमय हो जाती है, अलग-अलग पुष्प दिखाई नहीं पड़ते हैं। गायें चर करके तृप्त होकर के पवित्र श्रीयमुनाजी के जल को पीकरके जब बैठ जाती हैं तब ठाकुरजी बैठते हैं। तब तक बैठते नहीं, खड़े रहते हैं और इसके बाद ठाकुरजी छाछ आरोगते हैं, प्रसाद पाते हैं और पुनः जब गोचारण करके लौटते हैं तो फिर गोवंश के पीछे-पीछे चलकर आते हैं।

ऐसे, श्रीकृष्ण का भक्त यदि उसकी गाय में श्रद्धा नहीं है, गव्य पदार्थों में श्रद्धा नहीं है, कैसे स्वीकार किया जाय की वह भगवत् भक्त है, संत है अथवा वैष्णव है या आस्तिक है। इतना ही नहीं गाय में श्रद्धा नहीं है तो उसे भारतीय कहलाने का अधिकार नहीं है। हमारे वृन्दावन में एक परम तपस्वी ज्ञानवृद वयोवृद ऋषिकल्प महापुरुष विराजमान थे। जिनके चरणों में बैठकर दास को यत्किन्चित स्वाध्याय करने का अवसर प्राप्त हुआ। अनन्तश्री सम्पन्न पूज्य पंडित श्रीराजवंशी द्विवेदीजी धर्मसंघ वाले गुरुजी। एक बार दास ने सहज ही गुरुजी से पूछा! गुरुजी अत्यन्त सरल कोई परिभाषा बतायें सनातनधर्मी हिन्दु की। तो गुरुजी हंसने लगे। तो गाय के प्रति श्रद्धा की बात गुरुजी ने नहीं की। गुरुजी ने कहा गोमय और गोमूत्र में जिसकी श्रद्धा हो, गोमय में जिसे दिव्य सुगन्ध का अनुभव होता हो, गोमूत्र में जिसको दिव्य सुगन्धका अनुभव होता हो उसको उसका दर्शन करके चित्त में घृणा उत्पन्न नहीं होती हो, वही हिन्दू है, वही सनातनधर्मी है। अगर गोबर, गोमूत्र को देखकर श्रद्धा उत्पन्न नहीं होती, मन सात्विक नहीं होता तो गुरुजी कहते थे कहीं न कहीं से मलेच्छत्व उसमें आ गया है, वर्णसंकरी उसमें आ गया है।

एक और सुन्दर बात महाराजजी ने हम सबको बताई। वो यह बताई कि वह लूटमार करने वाला, पापमय जीवन जीने वाला दश्यु। नारद्जी की कृपा हुई और नारदजी ने उसे भजन में लगा दिया और हाथ में एक सूखे बांस का डण्डा दे दिया बोले यह हरा हो जावे तो समझ लेना तुम निष्पाप हो गये। इतने दिन साधन किया डण्डा हरा नहीं हुआ

और गाय की हिंसा करने वाले दुष्टों को उसने मारा तो उस पुण्य से वह सुखा डण्डा हरा हो गया।

आज गीता जयन्ति है, हमें अहिंसा की भी परिभाषा ठीक से समझनी पड़ेगी। 'अहिंसा परमोधर्मः' महाभारत में पितामह भीष्म 'अहिंसा सर्वभूतानाम् यथा माता तथा पिता। वो कहते हैं जिसने अहिंसा का व्रत ले रखा है वह समस्त प्राणियों को माता-पिता है पितामह भीष्म कह रह हैं। किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो भगवान वेद का निर्देश है। आज परम विद्वान श्रीपाठकजी भी आये हैं। किसी प्राणी का वध मत करो, किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो। अनजान में जो हिंसा हो जाती है अपरिहार्य हिंसा। पाँच प्रकार की हिंसा जो अनजाने में गृहस्थ के द्वारा हो जाती है। उसकी निवृति के लिये पंचमहायज्ञ का विध ाान किया। पंचमहायज्ञ किये बिना जो आहार ग्रहण करते हैं उनके सम्बन्ध में श्रीमद्भगवत गीता में कहा गया है जो अपने लिये बनाकर के खाता है वह वस्तुतः अन्न नहीं खाता, वह तो पाप का ही भक्षण करता है और जो यज्ञशिष्टासी है, तो कहते हैं- वे यज्ञ शिष्ट पाने वाले वे सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाते हैं।

यहाँ हिंसा का इतना सूक्ष्म विचार किया गया है। वहाँ हिंसा धर्म कैसे हो सकता है। अहिंसा की बड़ी भारी महिमा है। हमारे द्वाराचार्य जगत्गुरु श्रीमलूकदासजी महाराज ने तो यहाँ तक अपनी वाणी में कहा 'जेही घट दया तहाँ प्रभु आप, अपना सादुःख सबका जाने ताँके निकट न आवे पाप। तीर्थ व्रत करे जो कोई बिना दया सब निष्फल होई। पंडित पोथी पढ़े पचास बिना दया सब होई है नाश। बांध-बांध मुख खुन कराई, भाड़ पड़ो ऐसी पंडिताई।। हिंसा के विरोध में यह बात उन्होंने कही है और आगे तो यहाँ तक कह दिया 'जैसी बकरी तैसी गाय इनके कुहे नरक को जाए' वे कहते हैं कि यदि गाय के वध से नरक गामी होना पड़ेगा तो ऐसा नहीं है कि बकरी के मारने से नरक गामी नहीं होना पड़ेगा। तात्पर्य है कि वे जहाँ बकरी की हिंसा का भी विरोध कर रहे हैं तो गाय के प्रति उनकी कैसी भावना होगी। इसलिये अन्त में कहते हैं 'कह मलूक आत्मलो लावे जगन्नाथ घर बैठे पावे' दया की महिमा है, अहिंसा की महिमा है, बड़ी भारी महिमा है।

श्रीमद्भागवत में आज महाराजजी से परिचेताओं की चर्चा हुई। परिचेताओं ने नारदजी से पूछा- भगवान शीघ्र प्रसन्न कैसे होते हैं? तो देव ऋषि नारदजी ने कहा 'दया सर्वभूतेषु संतुष्टिया येन केनवा सर्वेन्द्रियों उपशांत्याच तुसत्यासुजर्नादन्' जो प्राणी मात्र पर दया करते हैं और जो कुछ उपलब्ध हो जाये उसी में परम संतुष्ट रहते हैं, अपने मन और इन्द्रियों को संयमित कर रखते हैं, नियन्त्रित करके रखते हैं, ऐसे जो महान भाव हैं उनपर भगवान शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। 'दया करे धर्म मन राखे जग से रहे उदासी, अपना सा दुख सबका जाने ताही मिले अविनाशी। उसे परमात्मा की प्राप्ति हो जाती हैं।

अहिंसा की, दया की बड़ी भारी महिमा का वर्णन किया गया है। पतंजलि योग सूत्र में कहा गया है कि अहिंसा की जब प्रतिष्ठा हो जायेगी तो उसके निकट रहने वाले जीवों में वैर भाव का त्याग हो जायेगा। महर्षियों के आश्रम में सिंह और मृग एक साथ निवास करते थे। सिंह को खुजली चल रही है और मृग ने अपने सिंग से उसकी खुजली दूर कर दी। यह महर्षियों के आश्रम में ऐसे दृश्य देखने को मिलते थे। उनमें पूर्ण अहिंसा की

प्रतिष्ठा होने के कारण वे पापी हिंसक प्राणी भी अहिंसा व्रति हो जाते थे उनके आश्रम की परिधि में प्रवेश करते ही। आप ऐसा न समझें कि यह हजारों वर्ष पहले सम्भव तथा आज सम्भव नहीं है। हमारे व्रज के ही निकट, ग्वालियरके निकट श्रीकर आश्रम, कर वाले बाबा, पटियावाले श्रीरामरत्नदासजी महाराज परम सिद्ध संत थे। बड़े नामनिष्ठ संत थे और उनमें अहिंसा की पूर्ण प्रतिष्ठा थी। सिंह-वाघ आदि डोलते पर किसी का अनिष्ठ नहीं करते। एक बिल्ली, उसने बच्चों को प्रसव किया। बिल्ली रूग्ण हो गई और मर गयी और एक कुतिया बिल्ली के बच्चों को खाने के लिये जा रही थी बाबा ने देख लिया। बड़े स्नेह से कहते हैं- अरे कुतिया देवी उनकी मैया मर गई है। दीन दुःखियों पर दया करना धर्म है, दया करो। अब उनको खाना मत। तुम्हारा कर्तव्य है बिल्ली के बच्चों को दूध पीलाकर पोषण करना। जाकर दूध पिलाना खाना नहीं। कुतिया उनकी बात मानकर गई और उसने बिल्ली के बच्चों को दूध पिलाकर पोषा। उसका चित्र आज भी रखा है। ३५-४० वर्ष पुरानी घटना है। अहिंसा की प्रतिष्ठा हो जाये तो यह होता है।

लेकिन आज गीता जयन्ति के पावन अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण ने सम्पूर्ण वेद उपनिषद् धर्मशास्त्रों का सार सर्वस्व भूत जो गीता है, उसका उपदेश देकर युद्ध में प्रवृत किया। जब तक अर्जुन ने यह नहीं कह दिया। बात समझ में नहीं आती हिंसा धर्म का मूल नहीं हिंसा अधर्म का मूल है। अहिंसा ही धर्म का मूल है। फिर ऐसा भगवान ने क्यों किया? इतनी लम्बी चौड़ी गीताका उपदेश देकर अर्जुन को क्षत्रिय धर्म में प्रवृत किया। इसका तात्पर्य है कि आसुरी शक्तियों की जो हिंसा है ना उनका जो विनाश है वो हिंसा की परिधि में नहीं अपितु अहिंसा की परिधि में आता है। उनको समाप्त करने से गो, ब्राह्मण, सात्विक प्रकृति के प्राणी उनका जीवन सुरक्षित होता है। इसलिये अर्जुनको भगवान ने धर्मयुद्ध के लिये प्रेरित किया। आदि काव्य श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में भगवान श्रीराम को महर्षि विश्वामित्र ने ताड़का वध के लिए प्रेरित किया तो रामजी को थोड़ा संकोच हुआ। हम रघुवंशी क्षत्रीय हैं। स्त्री का वध कैसे करें तो वहाँ प्रकरण में महर्षि ने अनेक उदाहरण दिये हैं। भगवान ने काव्यमाता निसुरिता वहाँ है। शुक्राचार्य की माता भृगुजी की पत्नि का वध किया था क्योंकि वह देवराज इन्द्र को सम्पूर्ण देवताओं सहित निगलना चाहती थी। भले ही ऋषि पत्नि थी पर वह देवताओं को देवी शक्ति को निगल जाना चाहती थी आसुरी शक्तियों की रक्षा करना चाहती थी तो भगवान विष्णु ने काव्यमाता निसुरिता भृगुजी पत्नि का वध किया था। पुराण में चरित्र प्रसिद्ध है। मन्थरा नाम की एक राक्षसी का वध इन्द्र ने किया था अनेक उदाहरण दिये हैं। भगवान श्रीराम ने कहा गुरुदेव हम तो केवल धर्म श्रवण करने के लिए आपके चरणों में यह निवेदन किया था। अब आपकी आज्ञा हो गयी है, मैं आपकी आज्ञा का अवश्य पालन करूँगा। महाराजजी बड़ा सुन्दर श्लोक है! भगवान श्रीराम कह रहे हैं- हे गुरु देव! मैं ताड़का वध करूँगा इसलिये क्योंकि इस ताड़का को मारना यह हिंसा नहीं है। यह अहिंसा धर्म की सुरक्षा के लिए किया गया एक श्रेष्ठ प्रयत्न है। भगवान कह रहे हैं- हे गुरुदेव महर्षि विश्वामित्र! गाय के हित के लिए भगवान ने सबसे पहले गाय का नाम लिया, गोरक्षा के लिए, गोपालन के लिए, ब्राह्मणों के हित के लिए, इन ऋषि-मुनि, संत-महात्माओं के कल्याण के लिए, यहाँ यही बड़ा कर्म है, कर्म यह निर्देश .....क्रमशः

बालक के आहार - विकास का क्रम

(**लेखिका - स्वामी श्रीविशुद्धानन्दजी परिव्राजक महाराज**)

बालकोंका लालन-पालन किस प्रकार करना चाहिये और उनका आहार-विहार कैसा होना चाहिये, इस सम्बन्धमें नारी-समाजमें बड़ा अज्ञान फैला है। हमारी आधुनिक नारियाँ प्रायः न तो यह जानती हैं कि उन्हें अपना खान-पान कैसे रखना चाहिये और न यही जानती हैं कि शिशुओं को कब दूध पिलाना चाहिये, एक बार का पिया हुआ दूध कब पचेगा और कितने समय बाद उसे पुनः दूध पिलानेकी अपेक्षा होगी और जो बालक कुछ अन्न लेने लगे हैं, उन्हें किस प्रकारका एवं कितना अन्न दिया जाना चाहिये।

उचित यह है कि माता बननेके पूर्व उनको इस बातका ज्ञान होना चाहिये कि माताका क्या कर्तव्य है, कितना उसपर उत्तरदायित्व है और उसे किस प्रकार पूर्ण किया जा सकता है। यदि बालकोंका पालन-पोषण उचित ढ़ंगपर करके उन्हें उत्तम दूध और आहार नियमसे दिया जाय तो वे अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट, प्रसन्नचित्त तथा कुल और देशका नाम उज्जवल करनेवाले हो सकते हैं। किसी देशके बालकोंकी जन्म-मृत्यु, स्वास्थ्य, चरित्र और शिक्षा व्यवस्थासे हम उस राष्ट्रकी शक्ति और उन्नति विकासका सहज ही अनुमान कर सकते हैं। अतः बालकोंका पालन-पोषण बड़ी ही तत्परतासे करना चाहिये।

जिस समय बालक उत्पन्न होता है, उसी समयसे उसके स्वास्थ्य, शिक्षा, चरित्र और लालन-पालनकी ओर ध्यान देना चाहिये। और यह उत्तरदायित्व विशेषतया माताका है; क्योंकि बालक माताका दूध पीता है, इस कारण यदि माता असावधान रहेगी और कोई कुपथ्य करेगी तो उसका प्रभाव बालकपर अवश्य पड़ेगा। अतः माताको पूर्णतया सावधान एवं संयमसे रहनेकी आवश्यकता है।

नवजात शिशुका आहार

नवजात शिशुका नाल काटनेके बाद शीतल जलसे मुँह धोकर आश्वासन करे और आयुर्वेद (सुश्रुत) के आदेशानुसार अनन्तमूल १ रत्ती, ब्राह्मीका स्वरस २ रत्ती, गोघृत ३ रत्ती और मधु (शहद) ६ रत्ती मिलाकर अँगुलीसे चटा दें। जब तक माताके स्तनमें दूध न आ जाय, तब तक यही भोजन दिन में छः बार और रात्रिमें चार बार देना चाहिये। इन सभी वस्तुओंको यथावकाश पूर्वसे ही एकत्र कर रखना चाहिये। बालक उत्पन्न होनेके तीन रात्रि बाद माताके स्तनोंमें यथेष्ट दूध आता है, ऐसा आयुर्वेदका सिद्धान्त है। अतः बालकको माताके स्तन पर तुरन्त नहीं लगाना चाहिये। दूध आनेमें यदि कोई बाधा दिखायी पड़े तो माता के स्वस्थ होने पर बालकको एकाध बार स्तनसे लगाया जा सकता है; क्योंकि शिशुके स्मरण, दर्शन, स्पर्श या उसके स्तन ग्रहण करनेसे स्तनमें दूधकी प्रवृति हो जाती है। जिन स्त्रियोंके पास बालकके लिये पर्याप्त दूध नहीं होता, उनमें अधिकांश बालकोंसे प्रेम न करनेवाली ही होती हैं। जो माताएँ बालकसे स्नेह रखनेवाली होती हैं, उनके स्तनोंसे शिशुका स्मरण करते

ही दूधकी धरा प्रवाहित होने लगती है।

बालकों का भोजन

बालकका प्रारम्भिक भोजन दूध ही है। प्रकृतिने शिशुमात्रके लिये दूधका ही विधान किया है। सभी प्राणी, शेर, चीता, भेड़िया आदि हिंसक जीव भी अपने बच्चेको अपना ही दूध पिलाते हैं, किंतु मनुष्यलोकमें खास करके आजकल इस नियमका कुछ उल्लंघन होने लगा है। सम्पन्न या शिक्षित घरोंकी कुछ आधुनिक माताएँ अपना दूध अपने शिशुको नहीं पिलातीं, वे अपना उत्तरदायित्व धात्रीपर छोड़कर निश्चित हो जाती हैं; पर यह अप्राकृत होनेसे माता और संतान दोनोंके लिये ही हानिकर होता है। शिशुको दूध न पिलानेसे प्रसूता नारीका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, इस बातको अब वैज्ञानिकोंने भी स्वीकार कर लिया है। अवश्य ही यदि माँ अस्वस्थ हो या उसके पर्याप्त दूध न हो तो उस अवस्थाामें नीरोग धायका दूध या पानी मिलाकर उबाला हुआ शुद्ध गुनगुना गो-दुग्ध दिया जा सकता है। जो नारियाँ किसी कारणवश बच्चेको स्तन पिलाना बिल्कुल पसंद न करती हों, उनको भी शिशुपर दया करके उसके कल्याणके लिये कम-से कम दो सप्ताहतक तो अवश्य स्तन पिलाना चाहिये; क्योंकि नवजात शिशुकी आँतोंमें काला मल चिपटा रहता है और उसे निकालनेका प्राकृत साधन मातृदुग्ध ही है। सद्यः प्रसूता स्त्रियोंका दूध रेचक होता है, उसको पीनेसे वह मल सहज ही निकल जाता है। इस आयुमें जिन बालकोंको माताका दूध नहीं मिलता, उनको विरेचन ओषधिकी आवश्यकता होती है और नन्हें से शिशुको विरेचन ओषधि देनेसे हानि होती है। यदि किसी कारणसे शिशुका मल रूक जाय तो उसे तीखा जुलाब न देकर बालघुटी या गुदामें ग्लिसरीनकी बत्ती लगााकर टट्टी करा देनी चाहिये।

दूध पिलाने की विधि

जिस किसी स्थितिमें बालकको दूध नहीं पिलाना चाहिये और न प्रत्येक समय दूध पिलाते ही रहना चाहिये। जब बालकको दूध पीनेकी अपेक्षा हो, तब स्तन धोकर और थोड़ा-सा दूध गिराकर पिलाना चाहिये। शिशुको सदैव बैठकर ही दूध पिलाना चाहिये। जो नारियाँ लेटे-लेटे अपने बालकोंको दूध पिलाती हैं, उनको कान बहने लगने हैं और अधिक दिन ध्यान न देनेसे जीवन भरके लिये वे बहरे हो जाते हैं। स्तन धोनेकी आवश्यकता इसलिये है कि उसमें पसीना लगा रहता है। झूँठा और गंदापन दूर करनेके लिये यदि प्रमाद और असावधानीसे स्तनको धोकर दूध गिराया नहीं जायेगा और यों ही शिशुको पिला दिया जायगा तो कफका अंश अधिक होनेसे एवं दूषित दूध न निकलनेसे प्रायः बालकको वमन, कास, श्वास आदि कई व्याधियाँ उत्पन्न हो जायँगी। यदि किसी कारणवश माता या धात्रीको क्रोध आ गया हो तो जब तक प्रकृति शान्त न हो, तब तक दूध नहीं पिलाना चाहिये। प्रायः माताएँ गृहके अन्य व्यक्तियोंसे अप्रसन्न होकर शिशुओंको स्तनपान कराती हैं, इसका कुप्रभाव बालकोंपर पड़ता है। अर्थात् क्रोधके कारण स्तन के विषैले परमाणुओंद्वारा विकृत हुआ दूध उनके शारीरिक स्वास्थ्यके लिये तो हानिकर होता ही है, उससे बालकोंके कोमल मस्तिष्कपर ऐसे कुसंस्कार पड़ जाते हैं जो उन्हें साधानकालमें निर्बल बनाकर पथभ्रष्ट कर देते हैं।

बालकको जल पिलाना

प्रायः अशिक्षित नारियाँ सर्दी होनेके भयसे शिशुओं को पानी नहीं पिलातीं। ऐसा करना ठीक नहीं है। एक मासकी आयुके उपरान्त उबाला हुआ शीतल जल बूँद - दो -

बूँद शिशुको कभी-कभी देना चाहिये। पानी प्रकृतिकी देन है, उससे डरना न चाहिये। हाँ, इसका अधिक और अयुक्त ढंगसे प्रयोग हानिकर हो सकता है। प्रायः कई माताएँ एक डेढ़ सालतक शिशुको जल नहीं देतीं, जिसका दुष्परिणाम यह होता है कि शिशु जो कुछ खाता है, पानीके अभावके कारण उसका ठीक परिपाक नहीं हो पाता और अन्तमें वह व्याधिग्रस्त हो जाता है। इस प्रकारकी युवती महिलाओंको सावधानीसे शिशुपालन की विधि सीखनी चाहिये।

कितनी बार कितना दूध पिलाना चाहिये

शिशुके किंचित रोते ही माताएँ दूध पिलाती हैं। यदि एक घंटेमें वह चार बार रोता है तो वे चारों ही बार शिशुको स्तन पिलाती हैं। इस प्रकार बालक स्वस्थ रहनेकी अपेक्षा अधिक दुर्बल हो जाता है। बिना पचे बार-बार दूध पिलाते रहनेसे वह दूध डालने लगता है। केवल भूख लगनेपर ही समयानुकूल दूध पिलाया जाय तो दूध डालना बंद हो जाय। नन्हें शिशुओंको अधिक बार दूध पिलानेकी आवश्यकता होती है। क्योंकि वे एक बारमें अल्पमात्रामें ही दूध पी पाते हैं और वह शिघ्र ही पच भी जाता है। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ती जाती है, त्यों - ही -त्यों दूधकी मात्रा बढ़ाते रहना चाहिये। वस्तुतः दूध पिलानेका ठीक समय वही हैं, जब शिशु भूखा हो, इसका कोई निश्चित समय नहीं बाँधा जा सकता और न परिमाण ही निश्चित किया जा सकता है। दूध पिलानेका जो समय निर्धारित किया जाता है, उसका अभिप्रायः यह नहीं होता कि यदि बालकको उस समय से पूर्व भूख लग जाय तो भी उसे दूध न पिलाया जाय और न तो यह होता है कि यदि शिशुको भूख न लगे तो भी ठीक उसी समय दूध पिलाया ही जाय। भूख लगनेपर भी शिशुको दूध नहीं दिया जायगा तो उसका पित्त कुपित हो जानेसे वह रक्तको जलायेगा और विलम्बसे पीया हुआ दूध ठीक-ठीक पचेगा भी नहीं। ठीक इसी प्रकार बिना भूख लगे दूध दिया जायगा तो अपच-अजीर्णादि कई व्याधियों हो जायँगी। नन्हें शिशुओं को जिस प्रकार दिनमें भूख लगती है, उसी प्रकार उन्हें रात्रिमें भी लगती है। अतः उन्हें रात्रिमें भी दूध देना चाहिये। ज्यों-ज्यों उनकी आयु बढ़ती जाती है, वे स्वयं रात्रिको दूध पीना कम करते जाते हैं।

अन्न देनेकी विधि

भारतवर्ष में छः मासकी आयुतक प्रायः शिशुओंके दाँत नहीं निकलते। प्रकृतिके नियमानुसार जब आमाशयमें दूधके अतिरिक्त अन्य पदार्थोंके पचानेकी कुछ शक्ति आ जाती है, तभी दाँत निकलते हैं। यदि किसी बालकके दाँत एक वर्षतक न निकलें तो उसे दूधके अतिरिक्त कुछ भी खानेको नहीं देना चाहिये। दाँत निकलनेपर भी मनमानी वस्तुएँ नहीं खिलानी चाहिये; क्योंकि आमाशय के निर्बल होनेसे अन्नादि पदार्थोंका ठीक पाचन नहीं हो सकता। आरम्भमें शिशुको जो आहार दिया जाय वह पतला, नरम, स्वल्प, बलकारक और किसी विकारके उत्पन्न किये बिना पच जानेवाला होना चाहिये। प्रायः युवती नारियाँ बिना दाँत निकले ही बिस्कुट, पेड़ा, लड्डू, मिठाई आदि गरिष्ठ भोजन बालकोंको देने लगती हैं, पर ऐसा करना नितान्त हानिकारक है। छः महीनेके बाद ही अन्नप्राशन-संस्कार प्रायः भारतवर्ष में होता है, वह भी इसी सिद्धान्तका निर्देश करता है; क्योंकि दाँत निकलनेकी आयु छः से आठ मास तक है। जब बालकके दो दाँत निकल आयें तो दूधकी मात्रा बढ़ा दें।

शेष मेटर अगले अंक में.....।

माँ का दूध बालक के लिये सर्वोत्तम आहार है

महाराज शिवाजी की गौ निष्ठा

(लेखकः- सतीश चन्द्र चौरसीया 'सरस')

शाहाजी के प्रिय पुत्र शिवा, आयु आठ की पाये थे।
पूना से पितु दर्शन करने, जब बीजापुर में आये थे।।
रामायन ग्रन्थ महाभारत, सुनते शुभ संस्कार जागे।
सच्चे हिन्दू का हृदय लिए, थे मातृ-पितृ भक्ती पागे।।

शाहाजी बोले सुनो शिवा, दरबार तुम्हें भी चलना है।
अन्तर मन वीर शिवा कहता, मत जाओ गहरी छलना है।।
बालक पर पड़ा धर्म संकट, पितु आज्ञा अस्वीकार नहीं।
अन्तर मन से प्रिय वीर शिवा, था जाने को तैयार नहीं।।

तेजस्वी बालक बुद्धिमान, बोला ले पितु अवलम्बन है।
गौ कामधेनु सुखदाता का, सौ बार 'सरस' अभिनंदन है।।

(24)

प्रिय पूज्य पिता हम हिन्दू हैं, दरबार में जब-जब जाते हैं।
तो आते-जाते राह में हम, गौओं को कटते पाते हैं।।
क्षत्रिय होकर हम आँखों से जब दृश्य निहारा करते हैं।
हत्यारे की गर्दन काटें, हो क्षुब्ध विचारा करते हैं।।

क्षत्रिय होकर गौ हत्या के, जो दृश्य निहारा करते हैं।
इससे तो मर जाना अच्छा, खुद को धिक्कारा करते हैं।।
गौ बधिकों पर शासन कर दूँ, या गौ रक्षा में मर जाऊँ।
डर यही आपको दुःख न हो, सर काटूँ या फिर कटवाऊँ।।

शाही दरबार जो जाऊँ तो, मेरा मन करता क्रन्दन है।
गौ कामधेनु सुखदाता का, सौ बार 'सरस' अभिनंदन है।।

(25)

सच्चे हिन्दू प्रियवीर शिवा, की बात शाह तक जाती है।
तेजस्वी बालक देख सकूँ, उसके मन में यही आती है।।
गोहत्या मांस बिक्री का, व्यवहार शहर से दूर करो।

माने न कसाई आज्ञा जो, उसको कोड़ों से चूर करो।।

प्रिय पूज्य पिता के साथ शिवा, दरबार में आते-जाते हैं।
इस बीच कसाई कुछ ऐसे, आज्ञा पर ध्यान न लाते हैं।।
कर दिया बन्द आना-जाना जब बीर शिवा मुँह मोड़ लिया।
शाहा से शहंशाह बोला, क्यों आना-जाना छोड़ दिया।।

गौ हत्यारों पर श्रीमन् का, हो पाया नहीं नियंत्रण है।
गौ कामधेनु सुखदाता का, सौ बार 'सरस' अभिनंदन है।।

(26)

फिर से आज्ञा दी शहंशाह, हत्यारे कोस दूर जायें।
दारू गौमांस बेचते हो, हिन्दू मारे तो मर जायें।।
अपराध न माना जायेगा, हिन्दू भी सजा न पायेगा।
अब शहर बीच गौवध करने, वाला दंडित हो जायेगा।।

इतने पर भी इक अभिमानी, हत्या को गाय ले जाता है।
है राज्य मुसलमानी हिन्दू, यह देख के चुप रह जाता है।।
गौ कातर सब को देख रही, रोती डकराती जाती है।
आगे जाना चाहती नहीं, अरु मार कसाई खाती है।।

इतने में घटना एक घटी, प्रकटा एक असुर निकंदन है।
गौ कामधेनु सुखदाता का, सौ बार 'सरस' अभिनंदन है।।

(27)

आस-पास के व्यापारी, आश्चर्य चकित रह जाते हैं।
प्रिय बालक वीर शिवाजी जब, तलवार खींच चमकाते हैं।।
वह कूद कसाई पास गये, गौ माँ का बन्धन काट दिया।
थर-थर काँपता कसाई था, बालक ने इतना डाँट दिया।।

मुँह से कुछ बोल सके इसके, पहले सिर धड़ से काट दिया।
जिस हाथ अनेकों गाय कटीं, उसको भी पल में छाँट दिया।।
परिवारी मृतक कसाई के, फरियाद सुनाने जाते हैं।
खारिज करते फरियाद शाह, उसको ही दोषी पाते हैं।।

यों वीर शिवा ने बचपन से, गौ माँ का कीन्हा वन्दन है।
गौ कामधेनु सुखदाता का, सौ बार 'सरस' अभिनंदन है।।

श्री कृष्ण और पुजारी का संवाद

एक गोसेवक

पिछले अंक से आगे .....पदाधिकारियों को यह करना है कि इस भीड़से दूर शांत स्थानमें अधिकसे अधिक जितनी मिल सके, भूमि खरीदो। उस भूमिपर एक विशाल 'गो-अभ्यारण्य' स्थापित करो। ऐसा गो-अभ्यारण्य जहाँ लाखों की संख्या में गोवंश स्वच्छंद विचरण कर सके। जहाँ चारों और सुरक्षित परकोटा हो, बिना आपकी इजाजत के कोई पंछी भी पर नहीं मार सके। जहाँ चारों और लह-लहराती हरी-भरी घास और स्वच्छ पानी के अनगिनित पोखर और तालाब हों। जहाँ हजारों की संख्या में परम गोभक्त ग्वाले उन गायों और बछड़ों की सेवा में रत हों। पोखरों और सरोवरों के किनारे हजारों गोभक्त संतों की कुटियाएँ हों जहाँ नित नई गोकथाओं के आयोजन होते हों।

देश में भ्रमण करो। देश की समस्त गोशालाओं की स्थिति देखो। जहाँ चारे की कमी हो वहाँ चारा भिजवाओ, जहाँ पानी की कमी हो वहाँ पानी, बीमार गायों के लिये औषध भिजवाओ। गोशालाओं में गायों के लिये छाया की व्यवस्था करो। गायों के दूध कम होने से गोपालक उन्हें छोड़ भैंसे व अंग्रेजी गायें रखने लग गये, क्योंकि गाय की महत्ता को न समझ आर्थिक पक्ष को ही देख रहे हैं। ऐसे में गायों की नस्ल सुधार का कार्य करना बड़ा पुनित कार्य है। अलग-अलग क्षेत्रों में नस्ल सुधार हेतु कार्य प्रारम्भ करना चाहिये। उत्तम नस्ल के नन्दी तैयार कर गांव-गांव वितरित करो। जहाँ अधिक संख्या में गायें हो वहाँ नन्दी शालाएँ खोलो। उन्नत नस्ल की अधिकाधिक गायें तैयार कर गोपालकों को वितरित करो। गोपालकों को बाजार भाव से अधिक राशि देकर गोगव्य खरीदो। आपके पास जो धन जनता से आया है, वो इस प्रकार गायों और गोपालकों में वितरित होने दो। जिससे से गायों की स्थिति में अवश्य सुधार होगा।

गायों की महत्ता और उपादेयता को लोग फिर से समझें, इसके लिये उच्चकोटि के सन्त महापुरुषों की गोकथाओं, प्रवचनों के बड़े-बड़े शहरों में विशाल आयोजन करवाओ। गो के सम्बन्ध में लिखे गये शास्त्र जो लुप्त हो गये हैं, उनको पुनः प्रकाशित करवाकर आमजन को सस्ती दरों पर उपलब्ध करवाओ।

किसानों और गोपालकों के सामने अभी एक बड़ी समस्या यह भी है कि गाय के बछड़ों का क्या किया जाये ? खेती सब मशीनों से होने लग गयी। इसलिये आप लोगों को जगह-जगह ऐसी गोशालाएँ खोलनी होगी जहाँ केवल बछड़ों को रखा जा सके। जब डीजल-पेट्रोल के भाव आसमान छूने लगेंगे तब खेती के लिये बैल ही विकल्प होगें। तब तक इन पर आपको ध्यान देना होगा। किसान के सामने बैलों को रखने में मुख्य समस्या अकाल के समय चारे की रहती है। अतः आप बैल रखने वाले किसानों को निःशुल्क चारा वितरित करो। इसके लिये आपको दो कार्य करने होंगे- पहला तो ऐसे किसान ढूँढ़ो जिनके पास कुओं में पर्याप्त पानी हो। ये किसान लोभ के कारण चारा उत्पन्न न कर नकदी फसलों की खेती करते हैं जिनसे चारा नहीं मिल पाता है। अब आप उनको अधिक दाम देकर चारा पैदा करवाओ। नकदी फसलों से किसान को जितनी आमदनी होती है, उससे अधिक दाम आप उसे चारे के दो। फिर

देखो देश में चारा ही चारा होगा। चारे की कमी रहेगी ही नहीं। फिर दूसरा कार्य यह करो कि जगह-जगह चारा वितरण केन्द्र खोलो। जहाँ केवल गोपालकों को निःशुल्क या अल्प दरों पर चारा उपलब्ध करवाया जाये।

बूढ़े, बीमार, अपंग, अंधे, दुर्घटनाग्रस्त आदि कष्ट में पड़े गोवंश के लिये भी आपको सोचना होगा। गोशालाओं में व अधिक गोवंश वाले गाँवों में चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना करनी होगी। पीड़ित गोवंश को तुरन्त राहत मिले, ऐसे उपायों से मैं बहुत प्रसन्न होता हूँ। बड़े-बड़े चिकित्सा केन्द्रों पर एम्बुलेंसों की व्यवस्था हो, जो २४ घण्टे ही सेवा में तत्पर रहे। मानव ईलाज की भाँति गोवंश के ईलाज में हर प्रकार की आधुनिक मशीनों का उपयोग करो। गोपालकों को भी प्रशिक्षित करो ताकि छोटी-छोटी तकलीफों को वे स्वयं तुरन्त दूर कर सके।

गायों के डॉक्टर तैयार करने के लिये किसी बड़ी गोशाला के साथ आधुनिक सुविधाओं युक्त एक महाविद्यालय की स्थापना करो। जिसमें विशेषकर गायों में होनेवाले रोगों के ईलाज के बारे में विशेज्ञ चिकित्सक तैयार किये जावे। आज स्थिति यह है कि अधिकतर संख्या में गोवंश किसी न किसी बीमारी से ग्रसित और पीड़ित है। कारण अनेक हैं, इसके बारे में भी व्यापक शोध होने चाहिये।

आमजन गोगव्यों का अपने जीवन में अधिकाधिक उपयोग करे, इस और विशेष ध्यान देना चाहिये। गोगव्यों का उपयोग करने से मानव की बुद्धि परिष्कृत होगी। तभी उसकी सोच कल्याण की ओर बढ़ेगी। सात्विक बुद्धि ही सबका भला सोच सकती है।

प्रयास यह होना चाहिये कि गांवों और शहरों में सबको पंचगव्य उपलब्ध हो सके। पंचगव्यों के विनियोग और वितरण के लिये एक बहुत बड़े तन्त्र की आवश्यकता है। इसमें धन का विनियोग कई लाभ देनेवाला है। पंचगव्यों की खपत जितनी अधिक होगी, उतनी ही अधिक गोओं की आवश्यकता होगी। जब चारों तरफ केवल पंचगव्य की ही मांग होगी, तो पशुपालक सब गोपालक बनने लगेंगे। इसमें करना यह होगा कि गोपालकों को आत्मनिर्भर बनाने के लिये उनसे दूध बाजार भावों से अधिक भावों पर क्रय करना होगा लेकिन बाजार में उसका वितरण सस्ती दरों पर करने से अन्य पशुओं के घी-दूध की मांग समाप्त हो जायेगी। धन की कमी नहीं है, ऐसे में यदि इस प्रकार की व्यवस्था लगातार २० वर्ष तक चलायी जाये तो अन्य पशुओं के उत्पाद के व्यवसाय की कमर टूट सकती है।

लगातार पंचगव्य के सेवन से मानव के भावों में भी परिवर्तन आयेगा। गोसेवा का भाव उत्तरोत्तर बढ़ेगा। पंचगव्य के सेवन से आसुरी शक्तियाँ का विनाश होगा। असुरभाव जो गाय का विरोधी है, वह पंचगव्य के सेवन से समाप्त हो सकता है। आम आदमी में पंचगव्य के सेवन का एक दूसरा बड़ा असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ेगा। मनुष्य में बीमारियें नगण्य हो जायेगी। प्रतिमाह लाखों रुपये अंग्रेजी दवाइयों में खर्च हो रहे हैं। उससे व पीड़ा से राहत मिलेगी।

अब तुम समझ गये होंगे कि मैं क्या चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मंदिर के इस विशाल भंडार से एक बार फिर एक विशाल गोसंस्कृति की स्थापना की जाये। देश और दुनिया के सामने तुम गोसेवा का एक महान उदाहरण प्रस्तुत करो, कदाचित ऐसा करने से गोमाता प्रसन्न होकर तुम्हारे किये गये पापों से तुम्हें मुक्त कर दे। जय गोमाता ! (समाप्त)

.....पृष्ठ ६ का शेष भाग

और शांत क्रांति है। शांतिमयी क्रांति है। शांतिमयी क्रांति से ही युवा यह इन सारे षडयंत्रों को और षडयंत्रकारियों को पराजित कर सकता है और पराजित करेगा। ऐसा हमें विश्वास है। जो गोवत्स बन रहा है युवा, उस युवा में वो सामर्थ्य होगा। जैसे ठाकुरजी ने किया है ना हमारे सामने एक आदर्श हैं। कन्हैया किसी बड़े आदमी के घर में जाकर नहीं जन्में, किसी राजा के घर में नहीं जन्मे, किसी ऋषि के आश्रम में भी नहीं जन्मे, उन्होंने गाय की सेवा करने वाले एक गोपालक के घर में जन्म लिया है मानी गोवत्स बनने के लिए और जब वो गोवत्स बन गये और तो उन्होंने सभी षड़यंत्रकारियों को एकदम खुला कर दिया और इससे वे सभी भाग गये। इस तरह से हमें अपने अपने जीवन और व्यवहारों से षडयंत्र और षडयंत्रकारियों को एकदम खुला मार्ग पर लाना है कि कौन और क्या बात इसके पीछे हैं।

यह भी दुर्भावना से नहीं करना है, उसमें भी उनका हित छुपा हुआ हो इस भाव से क्योंकि यह षडयंत्र और षडयंत्रकारी वास्तव में कोई व्यक्ति नहीं होता है, कोई समाज भी नहीं होता है। यह हर देश में हर काल में, हर समाज में, हर वर्ग में, उन-उन व्यक्तियों में यह आसुरी शक्ति प्रवेश कर उसके माध्यम से यह सब करवाती है। ऐसा घिनोना कार्य जो कर रहे हैं वे आसुरी शक्तियों से आविष्ट हैं। इसलिए वो व्यक्ति तथा समाज घृणा का प्रात्र नहीं है, उनके अन्दर जो आसुरी शक्तियाँ हैं वे घृणा के पात्र हैं और उनका शमन कैसे हो, वो ही उपाय हमें करने हैं और आसुरी शक्तियों का यह शमन गाय के गव्यों के विनियोग से होगा। वह विनियोग मानव जीवन के निर्वाह में, मानव के निर्वाह में आवश्यक भी है। अन्न, वस्त्र औषध में भी और प्रकृति व अन्य सभी व्यवस्थाओं के संचालन में यह महत्वपूर्ण और आवश्यक तत्व है। मानव जीवन में जगह-जगह ये सारे पंचगव्य के जो वैज्ञानिक विनियोग हैं वे इसी दृष्टि से हमारे पूर्वज मनिषियों ने बहुत ही उच्च सोच और मंथन से रखे थे, जिससे आसुरी शक्तियों का शमन होता है। जिसमें मानव सहित सम्पूर्ण सृष्टि का हित निहित है।

गोतत्व असुरतत्व का शमन करता है, इसलिए वह उसका विरोधी है। बस यही एक मुख्य कारण है कि जब भी असुरतत्व बढ़ता है तो वह सबसे पहले गो पर घात करता है, गोवंश पर आक्रमण करता है। भय भी उसको गाय से ही होता है। असुरों ने व्यक्तियों को माध्यम बनाकर गोशक्ति पर आक्रमण किया पर गोशक्ति कभी नष्ट नहीं होगी। गोशक्ति, सनातन शक्ति है, यह भगवत्शक्ति है और ये सभी अविनाशी हैं। ये अविनाशी होने से कभी नष्ट नहीं होंगे। कभी भी शांतिमयी क्रांति जगेगी। जिससे असुरों का विनाश अवश्यंभावी है। जय गोमाता जय गोपाल।

..शेष अगले अंक में

.....**पृष्ठ २७ का शेष भाग** ....झुंड-के झुंड रोते चिल्लाते हुए आगे बढ़ रहे थे। किलेकी छतपर बैठा अफगान लाइलाहा यह दृश्य देख रहा था।

ताराने पृथ्वीराजका ध्यान उधर दिलाया और कुमारके धनुषसे एक बाणने निकलकर लाइलाहाकी छातीको बींध दिया। वह लड़खड़ाता हुआ अपनी मसनदसे नीचे लुढ़क पड़ा। चारों ओर हाहाकार मच गया। पृथ्वीराज और तारा सैनिकोंसे मिलनेके लिये पीछेकी ओर दौड़े और रोना-पीटना .....**शेष पृष्ठ ३२ पर** .

दान-एक विहंगम दृष्टि

साभारः- दानमहिमा अंक

(लेखक- सम्पादक गीताप्रेस राधेश्याम खेमाका)

दान-धर्मके चार विभाग

व्यासभगवान्‌ने दान-धर्मको चार भागोंमें विभक्त किया है-

(1) नित्य दान - प्रत्येक व्यक्तिको अपने सामर्थ्यानुसार कर्तव्यबुद्धिसे नित्य कुछ-न-कुछ दान करना चाहिये। जो मनुष्य गायों को, श्रोत्रिय, कुलीन, विनयी, तपस्वी, सदाचारी तथा धनहीन ब्राह्मणोंको प्रतिदिन कुछ दान करता है, वह परमपदको प्राप्त करता है। असहाय एवं गरीबको भी नित्यप्रति सहायतारूपमें दान करना कल्याणकारी है। शास्त्रोंमें प्रत्येक गृहस्थके लिये पाँच प्रकारके ऋणों (देव-ऋण, पितृ-ऋण, ऋषि-ऋण, भूत-ऋण, और मनुष्य-ऋण)-से मुक्त होनेके लिये प्रतिदिन पंचमहायज्ञ करनेकी विधि है। अध्ययन-अध्यापन ब्रह्मयज्ञ (ऋषि-ऋणसे मुक्ति), श्राद्ध-तर्पण करना पितृयज्ञ (पितृ-ऋणसे मुक्ति), हवन-पूजन करना देवयज्ञ (देव-ऋणसे मुक्ति), बलिवैश्वदेव करना भूतयज्ञ (भूत-ऋणसे मुक्ति) और अतिथि-सत्कार करना मनुष्ययज्ञ (मनुष्य-ऋणसे मुक्ति) है। अतः गृहस्थको यथासाध्य प्रतिदिन इन्हें करना चाहिये।

बलिवैश्वदेवका तात्पर्य सारे विश्वको बलि (भोजन) देना है। बलिवैश्वदेव करनेसे गृहस्थ पापोंसे मुक्त होता है। इन सबकी गणना नित्य दानमें है।

(2) नैमित्तिक दान - जाने-अनजानेमें किये गये पापोंके शमनहेतु तीर्थ आदि पवित्र देशमें तथा अमावस्या, पूर्णिमा, व्यतिपात, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण आदि पुण्यकालमें अथवा किसी सुयोग्य सत्पात्रके प्राप्त होनेपर जो दान किया जाता है, उसे नैमित्तिक दान कहते हैं। यह दान सकाम एवं निष्काम (भगवत्प्रीत्यर्थ) -दोनों प्रकारका हो सकता है। वर्तमानमें गाय पहला सत्पात्र है।

(3) काम्य दान - किसी कामनाकी पूर्तिके लिये, ऐश्वर्य, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र आदिकी प्राप्ति तथा अपने किसी कार्यकी सिद्धिहेतु जो दान दिया जाता है, उसे काम्य दान कहते हैं। शास्त्रोंमें सकाम भावसे किये गये विभिन्न दानोंके विभिन्न फल लिख हैं। जैसे-तिलदानसे इच्छित सन्तान प्राप्त होती है। दीपदानसे उत्तम दृष्टि (चक्षु) -की प्राप्ति होती है, गृहदान करनेवालेको सुन्दर महल (आवास), स्वर्णदान करनेवालेको दीर्घ आयु, चाँदी दान करनेवालेको उत्तमरूप, वृषभदान करनेवालेको अचल सम्पत्ति (लक्ष्मी), शय्यादान करनेवालेको उत्तम भार्या, अभयदान करनेवालेको ऐश्वर्य, ईंधनका दान करनेसे प्रदीप्त जठराग्नि अर्थात् पाचनशक्तिका विकास, रोगियोंकी सेवामें दवा-फल आदिकी सहायता करनेपर रोगरहित दीर्घ आयुकी प्राप्ति, अन्नदान करनेसे अक्षयसुख, जलदान करनेसे तृप्ति और गोदान करनेवालेको ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है। इस प्रकार दानसे लौकिक सुख और कामनाओंकी पूर्ति भी होती है। वृद्ध और बीमार गायों की सेवा से समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है।

(4) विमल दान - भगवान्‌की प्रीति प्राप्त करनेके लिये निष्काम भावसे बिना किसी लौकिक स्वार्थके ब्रह्मज्ञानी अथवा सत्पात्रको दिया जानेवाला दान विमल दान कहलाता है। देश, काल और पात्रको ध्यानमें रखकर अथवा नित्यप्रति किया गया यह दान अत्यधिक कल्याणकारी होता है। यह सर्वश्रेष्ठ दान है।

दानदाता भी सच्चरित्र होना चाहिये

शुद्ध और सात्त्विक दानके लिये दान

लेनेवाला व्यक्ति जैसे सत्पात्र होना चाहिये, वैसे ही दानदाता भी सच्चरित्र और सत्पात्र होना चाहिये इसलिये भगवान्‌ने श्रीमद्भगवग्दीतामें दानकी अवश्यकर्तव्यतापर जोर देते हुए कहा कि यज्ञ, दान तथा तप मनीषियोंको पवित्र करते हैं –

'यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।।'

अब प्रश्न उठता है कि मनीषी कौन है? जिनका मन निर्मल है, जो मन, वाणी और कर्मसे एकरूप हैं तथा जो लोभसे रहित हैं – **'दानं लोभरहित्यम्'** अर्थात् सांसारिक अनित्य पदार्थोंके प्रति लालसा न रखना ही दान है, इस प्रकार सत्य, आर्जव, दया, अहिंसा आदि गुणोंसे युक्त व्यक्ति ही मनीषी कोटिमें है। अतः दानका पूर्ण लाभ प्राप्त करनेके लिये दानदाताको भी इस प्रकारका होना चाहिये।

दान का अवसर

देश, काल और पात्रकी जो व्याख्या शास्त्रोंमें बतायी गयी है, यद्यपि वह सर्वथा उचित है, परन्तु अनवसरमें भी यदि अवसर प्राप्त हो जाय तो भी दानका अपना एक वैशिष्टय है– जिस पात्रको आवश्यकता है, उसी क्षण दान देनेका अपना एक विशेश महत्व है। विशेष आपतिकालमें तत्क्षण पीड़ित समुदायको अन्न, जल, आवास आदिकी जो सहायता प्रदान की जाती है, वह इसी कोटिका दान है। यह दान व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों प्रकारसे होता है। जब कभी भूकम्प, बाढ़, दुर्भिक्ष, महामारी, दुर्घटना तथा कोई अन्य प्राकृतिक आपदा आ जाती है, तो तत्क्षण सामूहिक रूपसे सहायता तथा दानकी व्यवस्था करना परम कर्तव्य है।

इसी प्रकार किसी भी समय, किसी भी स्थान में तथा किसी भी जीव के भूख और प्याससे पीड़ित होनेपर अन्न और जलकी सेवा करनी चाहिये। अन्नदान और जलके दानमें कुपात्रका कोई विचार नहीं। इसे प्राप्त करनेके सभी अधिकारी हैं।

अन्य सभी दान देश, काल और पात्रकी अपेक्षा करते हैं, परन्तु अन्नदानके लिये समागत-अभ्यागत अतिथि चाहे जो भी हो, वह भगवान्‌का ही स्वरूप होता है। (अतिथिदेवो भव) अतः बिना नाम, गांव, जाति, कुल पूछे ही उन्हें आदरपूर्वक अन्नदान (भोजनदान) करें, वे ही सर्वश्रेष्ठ पात्र हैं, जब वे पधारें तभी सर्वश्रेष्ठ समय (काल) है, जहाँ वे पधारें, वही सर्वश्रेष्ठ देश (स्थान) हो जाता है। भूखेको अन्न, प्यासेको जल, रोगीको औषधि, वस्त्रहीनको वस्त्र, अशिक्षितको शिक्षा, निराश्रयीको आश्रय, जीविकाहीनको जीविका अत्यन्त उत्तम दान है। इनमें मूर्हूतकी अपेक्षा नहीं रहती। इन्हें किसी भी स्थनपर किसी भी समय कर सकते हैं।

दान और त्याग

किसी वस्तुसे अपनी सत्ता और ममता उठा लेना ही दान है, परंतु त्याग और दानमें भी थोड़ा अन्तर है। दान मुख्यतः पुण्यका और त्यागकी श्रेणीमें आता है, किंतु सभी प्रकारके त्याग दान नहीं हैं। दान प्राप्त वस्तुओंका और वह भी सीमित मात्रामें किया जा सकता है, जबकि त्याग अप्राप्त वस्तुओंका और असीमित मात्रामें हो सकता है। दानदाता स्वयंको दान-ग्रहणकर्ताके प्रति अनुगृहित मानता है, किंतु हर त्यागमें यह आवश्यक नहीं।

अनादिकालसे त्यागपूर्ण जीवनको ही उत्तम माना गया है। पौराणिक गाथाओं में त्यागके अनेक आदर्श कथानक हैं। महाराज शिबिने एक कबूतर की प्राणरक्षामें क्षुधातुर बाजके लिये अपने अंग-प्रत्यंगके मांसको काट-काटकर तोल दिया। महर्षि दधीचिने देवताओंके हितमें अपने प्राणोंका उत्सर्गकर

अपनी हड्डियाँ दे दीं। महाराज बलिने वामन भगवान्‌को अपना सर्वस्व तो दिया ही, अपना शरीर भी दे दिया। महाराज हरिशचन्द्र सत्यकी रक्षाके लिये अपने राज्यको त्यागकर स्वयं पत्नी और पुत्रके साथ काशीके बाजारमें गिक गये। रन्तिदेव, महाराज युधिष्ठिर, महान् दानी कर्ण आदिका त्यागपूर्ण जीवन किसीसे छिपा है? स्वदेशरक्षामें महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, झांसीकी महारानी लक्ष्मीबाई, सिक्खगुरु तेग-बहादूर, गुरु गोविन्दसिंह, बालगंगाधर तिलक, सुभाषचन्द्र बोस एंव चन्द्रशेखर आजाद आदिका त्याग भुलाया नहीं जा सकता।

दान आत्माका दिव्य गुण है, यह ध्यान रखना चाहिये कि व्यक्ति जो कुछ अर्जित करता है, वह केवल अपने पुरुषार्थ से नहीं बल्कि उसमें भगवत्कृपा मुख्य कारण है, साथ ही संसारके अनेक प्राणियोंका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग भी प्राप्त होता है, इस प्रकार उस प्राप्त धनपर हमारा अकेलेका अधिकार नहीं है। उपनिषदोंमें तो स्पष्ट निर्देश है- 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' अर्थात् तुम प्राप्त धन-सम्पत्तिका त्यागपूर्वक उपभोग करो। जितना तुम्हारे निर्वाहमात्रके लिये आवश्यक है, उतनेसे अधिकको तो अपना मानो ही मत। वह भगवान्‌की वस्तु है, उसे चराचर विश्वमें व्याप्त भगवान् की सेवामें लगा दो। निर्वाहमात्रके लिये जितना आवश्यक समझते हो, उसे भी पंचमहायज्ञ आदि के द्वारा त्यागपूर्वक अपने उपयोगमें लाओ। वास्तवमें धनके स्वामी तो एकमात्र लक्ष्मीपति भगवान् ही हैं। श्रीमद्भागवतमें तो यहाँतक कहा गया है कि जितनेसे पेट भरे, उतने ही अन्न-धनपर देहधारीका अधिकार है, उससे अधिकको जो अपना मानता है, वह चोर है, उसे दण्ड मिलना चाहिये-

यावद् भ्रियेत जठरं तावत् स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिकं योऽभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति।।

उपर्युक्त वचनसे परमात्मचिन्तन और त्याग- इन दो बातोंकी आज्ञा मिलती है, वस्तुतः यह परमात्मा की प्राप्तिका साक्षात् साधन है।

सकाम से निष्काम की ओर

वेद-पुराणोंमें कुछ ऐसे दानोंका भी वर्णन है, जो कामनाओं की पूर्तिके लिये किये जाते हैं, जिनमें तुलादान, गोदान, भूमिदान, स्वर्णदान, घटदान, अष्टमहादान, दशमहादान तथा षोडश महादान आदि परिगणित हैं- ये सभी प्रकारके दान काम्य होते हुए भी यदि निःस्वार्थभावसे भगवान्‌की प्रसन्नता प्राप्त करनेके निमित्त भगवद्र्पणबुद्धिसे किये जायँ तो वे ब्रह्मसमाधिमें परिणत होकर भगवत्प्राप्ति करानेमें विशेष सहायक सिद्ध हो सकेंगे।

कुछ दान ऐसे हैं, जिन्हें बहुजनहिताय -बहुजनसुखायकी भावनासे सर्वसाधारणके हितमें करनेकी परम्परा है। देवालय, विद्यालय, औषधालय, भोजनालय (अन्न क्षेत्र), अनाथालय, गोशाला, धर्मशाला, कुएँ, बावड़ी, तालाब आदि सर्वजनोपयोगी स्थानोंका निर्माण आदि कार्य यदि न्यायोपार्जित द्रव्यसे बिना यशकी कामनासे भगवत्प्रीत्यर्थ किये जायँ तो परमकल्याणकारी सिद्ध होंगे।

न्यायोपार्जितवित्तस्य दशमांशेन धीमतः।
कर्तव्यों विनियोगश्च ईश्वरप्रीत्यर्थमेव च।।

अन्यायपूर्वक अर्जित धनका दान करनेसे कोई पुण्य नहीं होता। यह बात **'न्यायोपार्जितवित्तस्य'** इस वचनसे स्पष्ट होती है। दान देनेका अभिमान तथा लेनेवालेपर किसी प्रकारके उपकारका भाव न उत्पन्न हो, इसके लिये इस श्लोकमें कर्तव्य पदका प्रयोग हुआ है। अर्थात् धनका इतना हिस्सा दान करना- यह मनुष्यका कर्तव्य है। मानवका मुख्य लक्ष्य है- ईश्वरकी प्रसन्नता प्राप्त करना।

गोदुग्धमाहात्म्यम्

पं.गङ्गाधरजी पाठक श्रीधाम वृन्दावन

गाय का दूध प्राणप्रद, रक्तपित्तनाशक, और पौष्टिक रसायन है । उनमें भी काली गाय का दूध त्रिदोषनाशक, परमशक्तिवर्द्धक और सर्वोत्तम होता है । गाय अन्य पशुओं की अपेक्षा सत्त्वगुणयुक्त है और दैवी-शक्ति का केन्द्रस्थान है । दैवी-शक्ति के योग से गोदुग्ध में सात्त्विक बल होता है । शरीर आदि की पुष्टि के साथ भोजन का परिपाक भी विधिवत् हो जाता है । यह कभी रोग उत्पन्न होने नहीं देता । आयुर्वेद में विभिन्न रङ्ग वाली गायों के दूध आदि का पृथक्-पृथक् गुण बताया गया है । गाय के दूध को सर्वथा छान कर ही पीना चाहिये, क्योंकि गाय के स्तन से दुग्ध-दोहन के समय प्राय: शरीर के रोम टूट कर दूध में गिर पड़ते हैं । गाय के रोम के पेट में जाने पर बड़ा पाप होता है । आयुर्वेद के अनुसार भी किसी पशु का बाल पेट में चले जाने से हानि ही होती है । गौ के रोम से तो राजयक्ष्मा आदि रोग भी सम्भव हो सकते हैं इसलिये गाय का दूध छानकर ही पीना चाहिये ।

वास्तव में दूध इस मृत्युलोक का अमृत ही है-

'अमृतं क्षीरभोजनम्'। गव्यं क्षीरं पथ्यमत्यन्तरुच्यं स्वादु स्निग्धं पित्तवातामयघ्नम् । कान्तिं प्रज्ञां बुद्धिमेधाङ्गपुष्टिं धत्ते स्पष्टं व्वीर्य्यवृद्धिं विधत्ते ।। (शालि.नि.)

अर्थ - गायका दूध पथ्य, अत्यन्त रुचिकर, स्वादिष्ट, स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, कान्तिजनक तथा प्रज्ञा, बुद्धि, मेधा, अङ्ग में पुष्टि और वीर्य्य को बढ़ाता है ।

अन्यच्च

गोक्षीरं जीवनं बल्यं रक्तपित्तानिलापहम् ।
आयुष्यं पुंस्त्वकृत्पथ्यं मेध्यं वृष्यं रसायनम् ।।

अर्थ- गाय का दूध जीवन, बलकारक, रक्तपित्तनाशक, वातनाशक, आयु और पौरुष्यवर्द्धक, पथ्य, मेधाजनक, वृष्य और रसायन है ।

गोदधिमाहात्म्यम्

'सर्वेषु दधिषु श्रेष्ठं गव्यमेव गुणावहम्' ।

सब प्रकार के दहियों में गाय का दही श्रेष्ठ और सर्वोत्कृष्ट गुण प्रदान करने वाला होता है ।

गव्यं दध्युत्तमं बल्यं पाके स्वादु रुचिप्रदम् । पवित्रं दीपनं स्निग्धं पुष्टिकृत्पवनापहम् ।। उक्तं दध्नामशेषाणां मध्ये गव्यं गुणाधिकम् ।।(भा०प्र०)

अर्थ- गाय का दही उत्तम, बलकारक, पचने में स्वादिष्ट, रुचिकारक, पवित्र, दीपन, स्निग्ध, पुष्टिकारक और वातविनाशक है । सब प्रकार के दही में गाय का दही गुणों में सबसे अधिक है ।

**अरोचके पीनसकासकृच्छ्रे शीतज्वरे तद्विषमज्वरे च ।
दुर्नामरोगे ग्रहणीगदे च गव्यं प्रशस्तं दधि सर्वदैव ।।**

अर्थ-गाय का दही अरुचि, पीनस, खाँसी, मूत्रकृच्छ्र, शीतज्वर, विषमज्वर, बवासीर और संग्रहणी रोग में हितकारी है ।

वीर बालिका तारा

(लेखक : श्रीमदनगोपालजी सिंहल)

अलाउद्दीनके शासनकालमें राजस्थान में एक छोटा-सा राज्य था बिदनौर और वहाँके शासक थे सूरसेन। सूरसेन बड़े जनप्रिय नरेश थे। प्रजा उनके गुणोंपर मोहित थी। उनकी एक कन्या थी, जिसका नाम था तारा। तारा सचमुच ही अपने पिताकी आँखोंका तारा थी। सूरसेन उसे अपने प्राणोंसे भी बढ़कर प्यार करते थे।

अलाउद्दीन एक-एक करके सभी हिंदू-राज्योंको अपने अधिकारमें करता चला जा रहा था, फिर बिदनौर ही क्योंकर बचता! उसके किलेपर भी इस्लामी ध्वज फहराने लगा।

सूरसेन अपनी कन्याके साथ एक निर्वासित-जैसा जीवन व्यतीत करते थे और साथ ही तारा के लालन-पालनमें अपनेको लगाये रखकर पूर्वकी स्मृतियोंको भुला देनेका उद्योग भी किया करते थे। इसी प्रकार कई वर्ष बीत गये। अब तारा पंद्रहवें वर्षमें चल रही थी, वह सब कुछ समझने लगी थी, पिताके शत्रुओंके प्रति उसके हृदयमें प्रतिहिंसाकी चिनगारी भी सुलग चुकि थी। वह उनसे बदला लेनेकी इच्छासे अब अपने पितासे ही युद्धकी शिक्षा प्राप्त कर रही थी। उसके चित्तका उत्साह, हृदयकी उमंग, वीरताका तेज और शरीरका सौन्दर्य दिन-दिन बढ़ता ही जा रहा थ और उसके गुणोंकी प्रशंसा दूर-दूर पहुँच चुकी थी। अनेको राजपूत उससे विवाह करनेकी इच्छासे आते थे और वह सबसे एक ही बात कह रही थी, तोतेके समान रटी हुई- 'मैं अपना विवाह उसीके साथ करूँगी, जो मेरे पिताका राज्य उन्हें वापस दिला देगा।'

यह सुनकर तथा साथ ही अलाउद्दीनके पराक्रमकी कल्पना कर उन आनेवाले नौजवानोंके हौसलोंपर पानी फिर जाता था।

जयपाल नामके एक राजपूतने एक बार ताराकी यह प्रतीज्ञा पूर्ण करनेका आश्वासन दे दिया। वह अपने घरसे चलकर सूरसेनके पास आकर रहने भी लगा; किंतु एक दिन ताराको एकान्तमें पाकर उसने कुछ अनुचित चेष्टा करनी चाही, जिसके परिणामस्वरूप ताराकी तलवारके एक ही वारने उसका काम तमाम कर दिया। उसका सिर धड़से पृथक् होकर पृथ्वीपर लोटने लगा।

फिर एक दूसरा युवक आया पृथ्वीराज-चित्तौड़का निर्वासित राजकुमार। उसने भी ताराके समक्ष अपनी वीरताका बखान किया।

'मैं सुनना नहीं चाहती, राजकुमार!' ताराने कहा। 'मैं तो तुम्हारे शौर्यको देखना चाहती हूँ। मुझसे विवाह करनेकी इच्छासे आनेवाले युवकोंसे उनकी अपनी वीरताकी बातें सुनते-सुनते तो अब मेरे कान पक चुके हैं।

'मैं केवल कहता ही नहीं, राजकुमारी! किंतु उसे दिखाऊँगा भी, मुझे अवसर की प्रतीक्षा है।' पृथ्वीराजने कहा। सचमुच ही वह अवसरकी प्रतीक्षामें था और जैसे ही अवसर आया पृथ्वीराज सूरसेनका आशीर्वाद और अपने पाँच सौ वीर राजपूत सैनिकोंको लेकर बिदनौरकी ओर चल भी दिया। तारा भी पुरुष-वेषमें उसके साथ चली, इससे पृथ्वीराजके उत्साहका पारावार न रहा।

उस दिन मोहर्रम का दिन था, ताजियोंका जनाजा उठ रहा था, 'हा हुसेन','हा हुसेन' करते हुए और अपनी छातियाँ पीटते हुए मुसलमानोंके .....**शेष पृष्ठ २२ पर** ..

हमारी गोमाता

(गोभक्त-शिरोमणि महाकवि महात्मा श्रीरामचन्द्रजी वीर)

साभारः- गोसेवा अंक

सनातन वैदिक धर्मका प्राण गोमाता का अंश है। गोमाताकी महिमा वेदों, पुराणों और समस्त धर्मग्रन्थोंमें हम पढ़ने हैं। वैष्णव, शैव, शाक्त और बौद्ध, जैन तथा आर्यसमाजमें गोमाताका जय-जयकार किया गया है।

भगवान् कृष्णका परम प्रिय गोकुल और गोवर्धन पर्वत था। भगवान् कृष्णका नाम गोपाल, गोविन्द कहा जाता है। रावणकी लंकामें विभीषण तथा उनके अनुयायियोंको छोड़कर समस्त राक्षस मांसाहारी थे, किंतु लंकामें कभी भी गोहत्या नहीं हुई। रावणकी आज्ञासे लंकामें गोमाताके वंशकी रक्षा की जाती थी।

हमारा आर्यावर्त जिसे भारत और हिन्दूस्थान कहते हैं, यहाँ और नेपालमें गोमाताकी पूजा की जाती है।

गोमाताका दूध पीनेसे अनेक रोगोंका नाश होता है। गोमाताके दूध-दही-घी और छाछके सेवन से शरीर स्वस्थ और सबल होता हे। महामारी प्लेग जब भारतके गाँवोंमें फैलती थी, तब हमारे पूर्वज गायके गोबरसे अपने घरोंके प्राचीरोंपर चार अंगुल चौड़ी बड़ी रेखा लीप देते थे।

गोमाताका मूत्र पीनेसे अनेक रोगोंका नाश होता है। मैंने अनेक रोगियोंको कई मासतक गोमूत्र पिलाकर महारोगसे मुक्त किया है। गोमाताके गोमूत्र के पीनेसे पाण्डुरोग, पीलिया मिट जाता है, किंतु पंद्रह दिनोंतक प्रतिदिन एक पाव गोमूत्र पीना चाहिये।

गोमाताकी रक्षाके लिये और जरासंधसे मथुरा, वृन्दावन तथा गोकुलको बचानेके लिये हमारे भगवान् श्रीकृष्ण द्वारका चले गये थे। भगवान् श्रीकृष्णको इसीलिये 'रणछोड़' कहा गया।

भगवान् श्रीरामके पूर्वज महाराज दिलीपने गुरुदेव वसिष्ठ महाराजकी गाय नन्दिनीकी रक्षाके लिये अपने-आपको सिंहके आगे अर्पित कर दिया था। मुगल-सम्राट् बाबरने मरनेके पूर्व अपने पुत्र हुमायूँको कहा था कि 'गाय और गायके वंशकी तुम सदा इज्जत और हिफाजत करना।'

रुस्तम खाँ पठान थे और वे भगवान कृष्णके भक्त होकर रसखान बन गये। हिन्दी-कविताके इतिहासमें रसखानका नाम अमर रहेगा। रसखान मुसलमान मुसलमान होकर भी गोमाता के भक्त थे। उन्होंने अपने कवित्तमें कहा था-

जो पसु हौं तौ कहा बसु मेरो,
चरौं नित नन्दकी धेनु मँझारन।।

अहा! रसखान धन्य थे, जो नन्द महाराजकी गायोंके साथ पशु बनकर घास चरनेकी इच्छा रखते थे।

हिन्दुओंके अन्तिम सम्राट पृथ्वीराज महाराजने मुहम्मद गोरीको अनेक बार पराजित करके भगा दिया था; किंतु देशद्रोही जयचन्दके षड्यन्त्रसे मुहम्मद गोरीने अपनी सेनाके आगे सैकड़ों गायें खड़ी करके पृथ्वीराज महाराज को छल-बलसे पकड़कर अफगानिस्तान ले जाकर मार डाला था। महाराज पृथ्वीराज, गोमाताको मेरा बाण न लग जाय उसी उद्देश्यसे युद्धमें शिथिल हो गये और पकड़े गये।

महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी महाराज महान् गोभक्त थे। शिवाजी महाराजने सोलह वर्षकी किशोरावस्थामें बीजापुरमें एक गोहत्यारे कसाईका सिर काट डाला था और रक्तमें रँगी हुई तलवार लेकर वे बीजापुरके नवाबके समाने जाकर खड़े हो गये थे, नवाब

शिवाजीसे भयभीत हो गया था। सन १८५७में अंग्रेजोंके विरूद्ध गोभक्त मंगल पाण्डेने 'गोमाताकी जय' बोलकर कई अंग्रेजोंके के सिर काट डाले थे।

नामधारी सिक्खोंके नेता रामसिंहजीने अनेक गोहत्यागृह-कसाईखानोंके पास जाकर सैकड़ों कसाईयोंको काट डाला था और वे अंग्रेजों द्वारा पकड़े जाकर अनेक नामधारी सिक्खोंके साथ तोपोंके गोलोंसे मारे जाकर अमर हो गये। सिक्खोंके महान् नेता गुरु गोविन्दसिंह महाराजने कहा था-

नमो उग्रदन्ती जयंती सवैया
नमो योग योगेश्वरी योग मैया।
यही देहु आज्ञा तुरुक को खपाऊँ
गौमातक दुख सदा मैं मिटाऊँ।।

आर्यसमाजके जन्मदाता महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराजने 'गोकरुणानिधि' नामकी पुस्तकमें गोमाताकी महिमाका बहुत अधिक वर्णन किया है। सन् १९२२ में बकराईद के दिन दिल्लीके दस हजार कसाई कुँजड़े हाजी काजी एक गायको लेकर दिल्लीके सदर बाजारसे बाजे बजाते हुए कुर्बानी करनेके जोशमें उछलते जा रहे थे। तब पहलवान लोटनसिंह जाट एक गलीसे निकलकर अपने पैंतीस जाट जवानोंके साथ आकर गोहत्यारोंकी कूट-पीटकर गायको छुड़ा ले गये।

भारतमें स्वराज्य हुए ४७ वर्ष हो गये, अब भी बम्बई प्रतिदिन दो हजार बैल काटे जाते हैं। कलकत्तेमें गोहत्या चालू है। टेंगरा और मटियाबुर्जके कसाईखानोंमें प्रतिदिन तीन हजारसे अधिक गाय-बैल-बछड़े काटे जाते है और गोमांस अरब आदि देशोंको भेजा जाता है।

गोहत्याके महापापके मुख्य कारण हमारे देशके कुछ हिन्दू भाई हैं जो अब बैलोंको छोड़कर ऊँओं और ट्रेक्टरोंसे खेतोंको जोतने लगे हैं। गायोंको उन्होंने बेच डाला है और भैंस रखने लगे हैं, फलस्वरूप गाय-बैलोंका संहार बहुत अधिक हो गया और अब वह समय आ गया है कि भारतमें गोमाताका वंश दिखायी नहीं देगा। विदेशी गायोंको जो शुद्ध गाय नहीं है, पालकर हमारे देशवासी भारतकी गोमाताके साथ अन्याय कर रहे हैं। हरियाणा, हांसी, हिसारकी गायें बहुत विख्यात थीं। हरियाणा की लाखों गायें कलकत्ते ले जाकर काट दी गयीं। अब हरियाणामें भैंस-ही-भैंस दिखायी दे रही हैं। राजस्थानके नागौर के बैल और गाय बहुत प्रसिद्ध थे। सौराष्ट्रकी गिर जातिकी गायें बहुत अधिक दूध देती हैं और वे बड़े आकारकी होती हैं। हमें प्रत्येक हिंदूको किसानोंको इस बातको समझना चाहिये और घर-घरमें गायें रखकर उनकी रक्षा करनी चाहिये।

पृष्ठ २२ का शेष

.छोड़कर मुसलमानोंने भी उनका पीछा किया। फाटकपर एक मस्त हाथी ने पृथ्वीराज का रास्ता रोका, किंतु ताराके एक वारने ही उसकी सूडको काटकर नीचे गिरा दिया। हाथी चिग्घाड़कर नगरकी ओर दोड़ पड़ा और सैकड़ों मुसलमान उसके पैरोंके नीचे कुचलकर मर गये।

उसी समय सैकड़ों राजपूतों की टोलीने नगरपर आक्रमण कर दिया। चारों और भगदड़ मच गयी। जो भाग गया, वही बचा, जिसने शस्त्र उठाना भी चाहा, वही काट दिया गया। मुसलमानोंकी पराजय हो गयी। बिदनौरके किलेपर फिर राजपूतोंका केसरिया ध्वज लहरा उठा। बिदनौर सूरसेन को मिल गया और तारा पृथ्वीराज को।

संस्था समाचार

परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के मार्च माह के प्रवास का संक्षिप्त विवरणः-

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज के मार्च, 2012 में राष्ट्र के गोसेवकों-गोभक्तों के आग्रह एवं गोसेवार्थ-गोरक्षार्थ लगभग पूरे माह विभिन्न कार्यक्रमों में राष्ट्रव्यापी प्रवास रहा।

श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज 29 फरवरी एवं 1 मार्च को पूना में गोसेवकों-गोभक्तों को एक विशेष बैठक में आशीवर्चन-मार्गदर्शन देने के पश्चात 2 से 4 मार्च,2012 को तीन दिवसीय गोसेवार्थ ''फाग महोत्सव'' में हैदराबाद पधारे।

गोग्रास सेवा समिति हैदराबाद की और से आयोजित ''फाग महोत्सव'' परम गोवत्स श्रीराधाकृष्णजी महाराज के श्रीमुख से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में हैदराबाद महानगर तथा आन्ध्रा प्रदेश के कोने-कोने से गोभक्तजन सपरिवार एवं ईष्ट मित्रगणों सहित पहुँचे।

गोसेवकों-गोभक्तों ने निराश्रित-अनाश्रित गोवंश की सेवा में बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए लगभग 150–200 ट्रक घास-चारा के सहयोग की घोषणाएँ की। हजारों गोसेवक श्रद्धालुओं ने गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के सानिध्य को पाकर गद्‌गद् महसुस कर रहे थे तथा सैंकड़ों गोभक्तों ने गोसेवा-गोरक्षा के साथ-२ जीवन में गोव्रत का संकल्प भी लिया।

ब्रह्मज्योति रथयात्रा सम्मेलनों में दक्षिण भारत पधारे।

ब्रह्मांशवतार संत शिरोमणि ब्रह्मर्षि प. पू. श्रीखेतारामजी महाराज के जन्मशताब्दी महामहोत्सव के उपलक्ष्य में राष्ट्रव्यापी भ्रमण कर रहे ''ब्रह्म ज्योति रथयात्रा'' के दक्षिण भारत पहुँचने पर वहाँ के लाखों गोसेवकों-गोभक्तों एवं गुरूभक्तों के आग्रह पर परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज 12 मार्च से 15 मार्च तक हैदराबाद, बैंगलोर, चैन्नई आदि महानगरों में विशेष सम्मेलन सभाओं में आशीर्वचन देने पधारे। इन सम्पूर्ण प्रवास में ब्रह्मधाम आसोतरा के गादीपति ब्रह्माचार्य प.पू. श्रीतुलछारामजी महाराज भी साथ थे।

इन नगरों में हुई ब्रह्म सभाओं एवं सम्मेलनों में दोनों महापुरूषों के दर्शनार्थ हजारों-२ श्रद्धालुजन उमड़े तथा संतों के दर्शन, सानिध्य एवं आशीर्वचन का पुण्य लाभ प्राप्त किया। कर्नाटक, आन्ध्राप्रदेश, तमिलनाडू एवं केरला आदि प्रदेशों में दोनों संत महापुरूषों का जिस किसी को भी सड़क मार्ग से आवागमन का पता लगा, मार्ग में पड़ने वाले छोटे-बड़े सभी शहरों में समस्त समाजों के मारवाड़ी जन ही नहीं बल्कि बड़ी संख्या में दक्षिण के क्षैत्रीय भाविकजन भी दर्शन हेतु पहुँचे।

श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ, नन्दगांव में राष्ट्रीय कामधेनु कल्याण परिवार की बैठक।

श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज 16 मार्च, 2012 को दक्षिण भारत प्रवास से श्रीमनोरमा गोलोकतीर्थ, नन्दगांव पधारे। विशाल नन्दगांव परिसर का भ्रमण कर गोसेवा कार्यों का अवलोकन करते हुए पूज्यश्री ने सैकड़ों ग्वालों एवं कार्यकत्ताओं को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए।

17–18 मार्च को दो दिवसीय राष्ट्रीय कामधेनु कल्याण परिवार, गोधाम पथमेड़ा के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की बैठक परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज की पावन निश्रा में नन्दगांव में सम्पन्न हुई। बैठक में गोशालाओं में घास-चारा, दवाओं एवं श्रमशक्ति आदि में बढ़ती मंहगाई तथा दिनोदिन निराश्रित-अनाश्रित गोवंश की बढ़ती संख्या के चलते विशाल रूप में बढ़ती आवश्यकताओं पर विस्तार से विचार-विमर्श हुआ।

बैठक में राज्य सरकार द्वारा गत डेढ़ वर्ष से राज्य की गोशालाओं को एक पैसा भी अनुदान व सहयोग नहीं दिए जाने पर विचार किया गया तथा गोशालाओं हेतु प्रदेशव्यापी स्थायी अनुदान की मांग करने का निर्णय लिया गया। पंचगव्य पर अनुसंधानात्मक कार्यों पर जोर देने, गोमय युक्त जैविक खेती को प्रोत्साहन के प्रयासों तथा अनाश्रित-निराश्रित गोवंश हेतु देश भर में अधिकाधिक जनमानस से विभिन्न तरीकों व माध्यमों से गोग्रास की परम्परा को अपनाने हेतु जन जागृति अभियान को ओर तेज करने का निर्णय लिया गया।

प्रातः स्मरणीय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने बैठक में उपस्थित सैंकड़ों वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को अपना तन-मन-धन सर्वस्व अर्थात सर्वाधिक शक्ति व सामर्थ्य को वर्तमान काल में गोसेवा-गोरक्षा में लगाने का आहवान किया। उन्होंने बताया कि यदि भावी पीढ़ियों को बचाना है एवं प्रकृति को सुरक्षित रखना है तो गोवंश को बचाना ही होगा अथवा सब कुछ समाप्त हो जायेगा।

परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज 19 से 21 मार्च को गोधाम पथमेड़ा विराजे, सैकड़ों गोसेवक श्रद्धालु प्रतिदिन दर्शनार्थ पहुँचते रहे।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज 22 मार्च को गोधाम पथमेड़ा से प्रस्थान कर ब्रह्म जागृति रथयात्रा के महाराष्ट्र, गुजरात एवं मध्यप्रदेश क्षेत्र के नगरों में आयोजित विशेष सम्मेलनों में 23 से 31 मार्च तक पूणे, मुम्बई, वापी, सूरत, आनन्द, अहमदाबाद, रतलाम आदि पधारे। ब्रह्मर्षि बह्माचार्य प.पू. श्रीतुलछारामजी महाराज भी सभी स्थानों पर साथ पधारे। इन प्रदेशों के गोसेवक-गोभक्तों एवं गुरुभक्त भाविकों ने सभी स्थानों पर दोनों संतवृंदों के स्वागत-अभिनन्दन में पलक-पावड़े बिछा दिए।

इस प्रवास में बीच में आने वाले दर्जनों शहरों-कस्बों में दोनों संतवृंदों का अभिनन्दन हुआ।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने सभी स्थानों पर मानवीय गुणों और ब्रह्मतत्व को एक ही बताते हुए कहा कि मानव को अन्य प्राणियों से अलग अथवा श्रेष्ठता प्रदान करने वाली गोमाता ही है। गोमाता का पंचगव्य ही हमारे मानवीय गुणों, मानवता एवं बह्मतत्व को जागृत करने में तथा पुष्ट करने में सक्षम है। उन्होंने ब्रह्मर्षि ब्रह्मांशवतार प.पू. श्रीखेतारामजी महाराज के सम्पूर्ण जीवन को गोमाता को समर्पित बताया और गोसेवा में जुड़ने एवं जुटने को सर्वश्रेष्ठ गुरु अराधना व गुरु समर्पण की संज्ञा दी।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने कहा कि ब्रह्मजागृति सम्पूर्ण मानव समाज की जातियों और समष्टि प्रकृति की रक्षा तक के लिए जरूरी है परन्तु यह तभी संभव है यदि विश्व धरा पर गोमाता सुखी एवं सुरक्षित हो। अब तक तो हमारे पूर्वजों के गोसेवा-गोपालन एवं पंचगव्य के अनुवांशिक गुणों के असर से मानव समाज बचा हुआ है परन्तु गोमाता की उपेक्षा एवं ह्रास इसी स्तर पर होता रहा तो मानवजाति हिंसात्मक प्रवृति सहित विभिन्न विकृतियों से ग्रस्त होते-२ नष्ट हो जायेगी।

आगामी गोसेवार्थ कार्यक्रमों की संक्षिप्त सुचना

उदयपुर में 'श्रीमद् भावगत कथा'' महोत्सवः- परम गोवत्स बालव्यास श्रीराधाकृष्णजी महाराज की भावपूर्ण रसमयी वाणी से गोसेवार्थ उदयपुर मेवाड़ में 1 से 7 मई, 2012 को ''गोभागवत कथा'' होगी। जानकारी हेतु पताः- गट्टानी स्कवायर, हरिदासजी की मगरी, उदयपुर है। दूरभाषः- 08003191911, 09314664412, 0294–2430683, 2430672

नून (जालोर) में श्रीगोभागवत कथा, नरसीजी की हुंडी एवं मीरा चरित्र।

4 से 10 मई, 2012 को नून (जालोर) में भागवत मर्मज्ञ प.पू. श्रीज्ञानानन्दजी महाराज के मुखारविन्द से ''श्रीगोभागवत कथा'' होगी। 8 मई को कथा के अतिरिक्त बालव्यास परम गोवत्स पूज्यश्री राधाकृष्णजी महाराज के श्रीमुख से ''नरसीजी की हुंडी'' तथा ९ मई को ''मीरा चरित्र'' पर मारवाड़ी में कार्यक्रम होगें।

समस्त ग्रामवासी नून (जालोर) द्वारा आयोजित कार्यक्रम '' श्री सुबेत्रा माताजी गोशाला समिति, नून'' परिसर में होंगे। सम्पूर्ण आयोजन में गोसेवकों को परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज का पावन सानिध्य एवं आशीवर्चन का लाभ मिलेगा।

11 से 13 मई भीलवाड़ा में ''नानी बाई रो मायरो''

बालव्यास प.पू. श्रीराधाकृष्णजी महराज की मधुर वाणी से ''गोभक्त परिवार, पथमेड़ा गोशाला शाखा-भीलवाड़ा'' द्वारा 11 से 13 मई 2012 को ''नाई बाई रो मायरो'' कार्यक्रम का आयोजन रखा गया है। प्रतिदिन सांयकालिन भजनसंध्या तथा अन्तिम दिन ''मीरा चरित्र'' का आयोजन भी रहेगा। कार्यक्रम स्थल श्रीअग्रवाल उत्सव भवन, रोड़वेज बस स्टेण्ड के सामने, भीलवाड़ा में आयोजित है।

गो साहित्य सृजन हेतु विशेष निवेदनः-
गो-लोकदेवताओं एवं अनुकरणीय गोभक्तों-गोसेवकों की जानकारी भेजें।

समस्त गोसेवक-गोभक्त पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आपके जिला, तहसील, पंचायत एवं गांव क्षैत्र में गोसेवा-गोरक्षा से जुड़े श्रेष्ठ एवं प्रेरणादायी गोरक्षक लोक देवताओं तथा देवात्माओं जैसे कि झूंझार, भोमीया आदि की पूरी गोसेवार्थ-गोरक्षार्थ जीवन चरित्र (जीवनी) एवं चित्र आदि सामग्री भेजें।

राजस्थान सहित भारतवर्ष की पावन धरा गोसेवा एवं गोभक्ति भाव से सदैव ओत-प्रोत रही हैं। सर्वत्र ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन को गोसेवा-गोरक्षा में सम्पूर्ण रूपसे न्यौछावर कर दिया। समाज के लिये ऐसे प्रेरणादायी गोसेवकों-गोरक्षकों की सम्पूर्ण जानकारी देश के लाखों-करोड़ों गोप्रेमियों को प्रमाणिक रूप से संग्रहित होकर उपलब्ध हो सके, ऐसा प्रयास है। इस हेतु शीघ्र ही समग्र साहित्य जिसमें गो-लोक देवताओं, गो-परम्पराओं एवं गोसेवा व गोरक्षा सम्बन्धित समस्त विशेष ऐतिहासिक एवं वर्तमान के व्यक्तित्वों पर साहित्य सृजन किया जा रहा है।

उपरोक्त सम्बन्ध में शीघ्रातिशीघ्र पत्र, ईमेल या फेक्स द्वारा प्रमाणिक जानकारी प्रेषित करें। अपने आस-पास से और स्वयं के जीवन में गोरक्षा-गोसेवा सबन्धित श्रेष्ठ अनुभव एवं चमत्कारिक अनुभुतियाँ को भी भेजें। सम्पर्कः- 9414154706, टेली. फेक्स - 02979 -287122 ई मेल. k.k.p.pathmeda@gmail.com

व्रत-पर्वोत्सव

वैशाखमास - माहात्म्य

न माधवसमो मासो न कृतेन युग समम्।
न च वेदसमं शास्त्रं न तीर्थं गंगया समम्।।

(स्कन्दपुराण, वै.वै.मा.२/१)

वैशाख के समान कोई मास नहीं है, सत्ययुग के समान कोई युग नहीं हैं, वैद के समान कोई शास्त्र नहीं है और गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं है। वैशाख मास अपने कतिपय वैशिष्टय के कारण उत्तम मास है।

नारदजी ने अम्बरीष से कहा- वैशाख मास को ब्रह्माजी ने सब मासों में उत्तम सिद्ध किया है। वह माता की भांति सब जीवों को सदा अभीष्टवस्तु प्रदान करने वाला है। धर्म यज्ञ क्रिया और तपस्या का सार है। सम्पूर्ण देवताओं द्वारा पूजित है। जैसे विद्याओं में वेद-विद्या, मन्त्रों में प्रवण, वृक्षों में कल्पवृक्ष, धेनुओं में कामधेनु, देवताओं मे विष्णु, वर्णों में ब्राह्मण, प्रिय वस्तुओं में प्राण, नदियों में गंगाजी, तेजों में सूर्य, अस्त-शस्त्रों में चक्र, धातुओं में सुवर्ण, वैष्णवों में शिव तथा रत्नों में कौस्तुकभ मणि उत्तम है, उसी प्रकार धर्म के साधन भूत महीनों में वैशाख मास सबसे उत्तम है। भगवान विष्णु को प्रसन्न करने वाला इसके समान दूसरा कोई मास नहीं है। जो वैशाखमास में सूर्योदय से पहले स्नान करता है। उससे भगवान् विष्णु निरन्तर प्रीति करते हैं। पाप तभी तक गर्जते हैं, जबतक जीव वैशाख मास में प्रातःकाल जल से स्नान नहीं करता। राजन्! वैशाख मास में सब तीर्थ, देवता आदि बाहर के जल में भी सदैव स्थित रहते हैं। भगवान् विष्णु की आज्ञा से मनुष्यों का कल्याण करने के लिये वे सूर्योदय से लेकर छः दण्ड के भीतर वहाँ उपस्थित रहते हैं।

वैशाख सर्वश्रेष्ठ मास है और शेषशायी भगवान् विष्णु को सदा प्रिय है। सब दानों से जो पुण्य होता है और सब तीर्थों में जो फल होता है, उसीको मनुष्य वैशाख मास में केवल जलदान करके प्राप्त कर लेता है। जो जलदान से असमर्थ है, ऐसे ऐश्वर्य की अभिलाषा रखनेवाले पुरुष को उचित है कि वह दूसरे को प्रबोध करे, दूसरे को जलदान का महत्त्व समझाये। यह सब दानों से बढकर हितकारी है। जो मनुष्य वैशाख मास में गायों के लिये पीने के पानी की व्यवस्था करता है या मार्गपर यात्रियों के लिये प्याऊ लगाता है, वह विष्णु लोकमें प्रतिष्ठत होता है। नृपश्रेष्ठ! प्रपादान देवताओं, पितरों तथा ऋषियों को अत्यन्त प्रीति देनेवाला है। जिसने प्याऊ लगाकर रास्ते के थके मंदे मनुष्यों को संतुष्ट किया है। राजन! वैशाख मास में जल की इच्छा रखने वाले को जल, छाँयाचाहने वाले को छाता और पंखे की इच्छा रखने वाले को पंखा देना चाहिए। राजन! जो व्यक्ति प्यासी गायों के लिये शीतल जल प्रदान करता है, वह उतने ही मात्रा में दस हजार राजसूय यज्ञों का फल पाता है। धूप और भूख-प्यास से पीड़ित गाय, ब्राह्मण, साधु को जो भोजन और शीतल जल प्रदान करता है, वह उतने ही मात्रा में निष्पाप होकर भगवान् का पार्षद हो जाता है। जो मार्ग में थके हुए श्रेष्ठ द्विज को वस्त्र से ही हवा करता है, वह उतने से ही मुक्त हो भगवान् विष्णु का सायुज्य प्राप्त करता लेता है। जो विष्णु प्रिय वैशाख मास में जरूरतमन्द को पादुका दान करता है, वह यमदूतों का तिरस्कार करके विष्णुलोक में जाता है। जो गायों के लिये गोशाला और मार्ग में अनाथों के ठहरने के लिये विश्रामशाला बनवाता है, उसके पुण्य फल का वर्णन नहीं किया जा सकता। मध्यान्ह में आये हुए ब्राह्मण अतिथि को यदि कोई भोजन दे तो उसके फल का अन्त नहीं होता है। विष्णुप्रिय वैशाख मास में कोई भी किया गया पुण्य कर्म नष्ट नहीं होता है।

गोशाला

साभारः गोशाला

(पंचखण्ड पीठाधीश्वर प. पू. आचार्य श्री धर्मेन्द्रजी महाराज)

(226)

मैं न मरूँ शया पर निर्वश
पी औषधियों का प्याला
नहीं तुम्हारा नाम स्मरण कर
अथवा जप करके माला
मेरी हो जब मृत्यु नाथ ! तब
गोशाला के कारण हो
धर्मयुद्ध में मरूँ और हो एक लक्ष्य बस -
गोशाला

(227)

हट जाएगा छँट जाएगा
यह नैराश्य तिमिर काला
नव प्रभात लौटेगा भू पर
फिर स्वर्णिम स्वप्नों वाला
स्वर्ग लोक -सा अनुभव होगा
फिर से अपना देश हमें
ग्राम-ग्राम घर-घर में जिस दिन खुल जाएँगी
गोशाला

(228)

युद्ध विरोधी उपदेशों से
शांत न होगी विष -ज्वाला
नहीं रूकेगा समर भयंकर
विश्व भस्म करने वाला
विश्व-शांति के पहरेदारों
शांति स्वयं हो जाऐगी
ग्राम-ग्राम घर-घर में जिस दिन खुल जाएँगी
गोशाला

(229)

टिक न सकेगा गोशाला में
फुट-कलह का विष काला
सुलग सकेगी नही क्षुधा की
सर्वग्रासिनी यह ज्वाला
द्वंद्व-द्वेष का कलह-क्लेश का
नहीं रहेगा लेश यहाँ
ग्राम-ग्राम घर-घर में जिस दिन खुल
जाएँगी गोशाला

(230)

मत आह्वान करो यों प्रभु का
पूर्ण करो पय का प्याला
पंक्ति सजा दो गो-वत्सों की
छोड़ो पुष्पों की माला
गोकुल में गोपाल कृष्ण तो
स्वयं दौड़ कर आएँगे
ग्राम -ग्राम घर-घर में जिस दिन खुल
जाएँगी गोशाला

(231)

फिर गूँजेगा वृन्दावन में
वंशी का रव मतवाला
प्रादुर्भूत पुनः होंगे प्रभु
गोकुल में बनकर ग्वाला
फिर से भारत देश हमारा
नन्दन-वन बन जाएगा
ग्राम-ग्रम घर-घर में जिस दिन खुल
जाएँगी गोशाला

मासिक पत्रिका ''कामधेनु–कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक स्वामी ज्ञानानन्द द्वारा सुभद्रा प्रिंटिंग प्रेस, विश्नोई धर्मशाला के पास, साँचौर (जालोर) से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, पोस्ट–हाड़ेतर, तहसील–सांचौर, जिला–जालोर (राजस्थान) से प्रकाशित।

श्रीगोधाम पथमेड़ा द्वारा स्थापित, संचालित एवं प्रेरित गोशाला आश्रमों में संरक्षित गोवंश की संख्या

(1.)वृद्ध तथा कमजोर गायें - 37481 (2.) बीमार एवं विकलांग गायें -11416 (3.)नकार एवं कमजोर नंदी 10122
(4.) बीमार एवं विकलांग नंदी - 11195 (5.) छोटे वृषभ - 9646 (6.) स्वस्थ गायें, बैल एवं नंदी - 18967
(7.) छोटे बड़े बछड़े-बछड़ियाँ - 23633 तथा , वर्तमान में सभी शाखाओं में कुल गोवंश की संख्याः-122450 है।

विशेष नोटः- उपरोक्त लगभग १ लाख से अधिक अनाश्रित-निराश्रित गोवंश के अतिरिक्त पिछले वर्षों में अकाल से पीड़ित लाखों निराश्रित गोवंश की भी प्रदेश के विभिन्न भागों में आपात गोसंरक्षण केन्द्र खोलकर सेवा-सुश्रुषा जारी रही।

बीते वर्ष अच्छे मानसून के चलते संतवृंदों के आह्वान पर राज्यभर में शिविरों व गोशालाओं से स्वस्थ, गर्भस्थ एवं दुधारू गोवंश को सीधे किसानों को बड़ी संख्या में वितरित भी किया गया। परन्तु वर्तमान में फिर से एक बार अकाल वर्षों की ही भाँति घास-चारा की मँहगाई एवं अनुपलब्धता का सामना पूरे प्रदेश में तथा विशेषकर गोधाम पथमेड़ा संचालित गोशालाओं को करना पड़ रहा है। अतः समय से पूर्व ही अकाल जैसी हो चुकी परिस्थितियों से विवश गोपालक अनुपयोगी गोवंश को निराश्रित छोड़ रहे हैं। फलतः गोशालाओं में लगातार गोवंश बढ़ता जा रहा है और भूख-प्यास एवं कसाईयों के क्रूर हाथों से बचाने का कार्य भी प्रदेशभर में युद्ध स्तर पर जारी रखना आवश्यक है। जबकि पिछले डेढ़ वर्ष से सरकार से किसी भी प्रकार का गोशालाओं को अनुदान व सहयोग नहीं मिल रहा है। अतः विनम्र आग्रह है कि समस्त गोभक्त-गोसेवक तत्काल अधिकाधिक सहयोग के साथ आगे आवें।

-: कार्यालय एवं कार्यकत्ताओं के सम्पर्क सूत्र :-

केन्द्रीय कार्यालय पथमेड़ा (02979) 287102,09 फैक्स 287122 मो. 7742093168, 9414131008, 9413373168, 9414152163
श्री मनोरमा गोलोक महातीर्थ, नंदगांव (02975) 287341,42, 44, 9460717101, टे.फै. 02975-287343, 7742093200
दक्षिणांचल कार्या. बैंगलोर 08022343108 9449052168, 09829101008,09483520101
पश्चिमांचल मुख्यालय मुम्बई 02266393598,9702041008, 9969465325,9920871008

भायन्दर	9819772061,9029519779, 9324525247,9920871008
पूना	9372220347,9326960169,9029519779,9920871008
गोवा	7709587648, 9029519779, 9920871008
सूरत	9825130640, 9909914721, 9374538576, 9825572768, 9426106315, 0261.2369777
वापी	9427127906, 0260-2427475
चैन्नई	9884173998,9952077188,944057448,9445165901,9380570040
हैदराबाद	9440230491,9849007572,9849115851
अहमदाबाद	9426008540,9427320969,9824444049,9925019721,9374541460(079)25320652,
पंजाब	9814036249, 9417155533, 9815468646, 9417380950,9417601223
दिल्ली	9811284207, 9810165260, 9312227141, 9811985292
कोलकत्ता	9903016181, 9339355679
जोधपुर	9414145448,9414136210, 9414177119
अंकलेश्वर	9909946972, 9427101391,9825323694
जयपुर	0141-2299090,9929231144,9829067010, 9001000300, 9413369945
हरियाणा	9416050318, 9812019003,9812307929, 9829598216
भीलवाड़ा	9829045270, 9414113284,9413357589
बालोतरा	02988-223873,9413503100, 9414107818, 9460889930
बनासकांठा	9426408451,9979565700,9898869898,9427044445,9924941000
बाड़मेर	9413308582, 9414106528, 9414106331

अधिकाधिक गोभक्त मासिक ''कामधेनु-कल्याण'' के 10 वर्षीय आजीवन सदस्य बने। सदस्यता राशि 1100 रूपये का ड्राफ्ट ''कामधेनु प्रकाशन समिति'' के नाम से सम्पादकीय पते पर अथवा बी.ओ.बी शाखा सांचोर में ऑनलाईन खाता संख्या 29450100000326 में भेंजे।

RNI NO. RAJHIN/06/17167 POST REGD NO.RJ/SRO/9638/2012-2014

देशी गोवंश के गव्यों के विनियोग का प्रामाणिक उपक्रम

गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा का विशिष्ठ आयाम

पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पाद प्रा. लि.

गोधाम पथमेड़ा, सांचोर (राज.) 343041 मो. 08003193111, 7742073191, 181
Email:- parthvimeda@gmail.com, Web.s.:- Www.pathmeda.org

Indian cow,s
PURE GHEE . MILLK

गोउत्पादों हेतु सम्पर्क करें

सांचोर - 7742093171, 9414425545
भीनमाल- 9413854449
रानीवाड़ा - 9024202921, 9414565658
जालोर - 9024597505, 9950539531
बालोतरा- 9414270771, 9413503100
जोधपुर - 9414145448, 7597525433
पाली - 9461343724, 02932282221
बाड़मेर - 7742093179, 9414342446
अहमदाबाद -09428729366,9429131066
सुरत - 0261-2369777,09825572768
डीसा - 9426428751
रायपुर- 09425515915

मुम्बई - 02266393598, 9702041008
भयंदर - 98190772061, 9029519779
पुणे - 09372220347, 9326960169
गोवा- 7709587648,9029519779
पाटण - 09824929551
भाभर - 09714682899
दियोदर -09925424968,09909466280
जयपुर - 9414048061
दिल्ली - 9811985292, 09311554601, 08860602160
लुधियाना - 9814036249
कानपुर - 9984211112
टेट्रोड़ा - 09724325325, 9724325311

बैंगलोर - 09449052168 09829101008
मद्रास - 9884173998
धानेरा - 9426037053, 9428679285
कोलकत्ता -9163302679
बीकानेर - 0151.2201021
हैदराबाद - 09849115851
पालनपुर - 09428459225
मेड़ता सिटी -9414119299
नंदग्राम - 7742093200
भीलवाड़ा-9413357589, 9414113284
वृन्दावन - 09829014281

भीलवाड़ा जिला की समस्त गोशालाओं
एवं
गोधाम पथमेड़ा के निराश्रित एवं अनाश्रित गोवंश के सेवार्थ

परम पूज्य गोवत्स श्रीराधाकृष्णजी महाराज
के श्रीमुख से

''नानी बाई रो मायरो''

(11 से 13 मई, 2012 समय प्रातः 8.30 से 12.15 बजे तक)

आयोजकः- गोभक्त परिवार, शाखा पथमेड़ा गोशाला,भीलवाड़ा।
सम्पर्क सूत्रः- 9414026108, 9414028108, 9413357589

सहयोग को आप सीधे ही निम्न में से किसी भी
बैंक में ऑन लाईन जमा करवा सकते है।

Account Name
Shree Gopal Govardhan Goshala, Pathmeda

Bank's Name	: Account No
बैंक ऑफ बड़ौदा Bank of Baroda India's International Bank	29450100007739
भारतीय स्टेट बैंक State Bank of India With you- all the way Pure Banking. Nothing else.	31187795707
स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर State Bank of Bikaner and Jaipur The Bank with a vision	51055523971